04 - लालित्यं शरणं व्रज- सांस्कृतिक यात्रा पर ले जाती...

05 - भारतीय चित्रकला में रवि वर्मा का स्थान

06 - बाबा साहब का जीवन संघर्ष, शिक्षा और आत्मसम्मान...

07 - बॉक्स ऑफिस पर ढेर, दिग्गजों के सपने

A Daily News Magazine
भोपाल
रविवार, 26 अप्रैल, 2026

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 233, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

जहांगीर महल ओरछा

इसे 17वीं सदी में बुंदेला शासक राजा वीर सिंह देव ने मुगल बादशाह जहांगीर के स्वागत में बनवाया था। बेतवा नदी के तट पर स्थित यह महल, बुंदेलाऔर मुगल वास्तुकला के मिश्रण का बेहतरीन उदाहरण है। **फोटो- महेश मुद्गल**

सुप्रभात

जल है तो कल है
आज सिर्फ छल है
छल में ही बल है
गुमसुम कलकल है

रीते हैं घट और
सूना पनघट है
तपती डगर डगर
झुलसा शहर है

बोतल में नीर है
बाजार बगलगीर है
माथे पसीना और
कंठ चूभता तीर है।

– सुरेश उपाध्याय

भारत का विश्वगुरु बनना निश्चित है : संघ प्रमुख भागवत

- आरएसएस चीफ बोले-देश के भविष्य पर संदेह न करें
- कहा-राम मंदिर बनने को लेकर भी लोग शक करते थे

नागपुर (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयं सेवक प्रमुख मोहन भागवत ने कहा है कि भारत निश्चित रूप से विश्वगुरु बनेगा और इस पर किसी को संदेह नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि एक समय था, जब लोग अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर के निर्माण को लेकर संशय में रहते थे। इसे असंभव मानते थे। लेकिन आज वह मंदिर सबके सामने साक्षात खड़ा है। ठीक उसी प्रकार, भारत का विश्वगुरु के रूप में पुनरुत्थान भी पूरी तरह निश्चित है और इस यात्रा को रोका नहीं जा सकता। भागवत ने यह बात नागपुर में नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट परिसर में बनने वाले भारत दुर्गा शक्ति स्थल मंदिर के भूमि पूजन कार्यक्रम में कही। इस मौके पर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस, केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी, स्वामी अवधेशानंद गिरि महाराज, स्वामी मित्रानंदजी महाराज, साध्वी ऋतंभरा और धीरेन्द्र शास्त्री सहित कई धार्मिक नेता भी मौजूद थे। आरएसएस चीफ ने कहा- देश के भविष्य को लेकर कोई संदेह न रखें और साहस व आत्मनिर्भरता के साथ जीवन जिएं। उनके मुताबिक, अगर लोग अपने संकल्प के अनुसार कदम-दर-कदम आगे बढ़ें, तो भारत मजबूत और सशक्त बनेगा।

पश्चिमी सोच को त्यागकर भारतीय परंपराओं से जुड़ें

आरएसएस प्रमुख ने नागरिकों से पश्चिमी सोच को त्यागने और विचार एवं व्यवहार में भारतीय परंपराओं से दोबार जुड़ने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि यह परिवर्तन दैनिक जीवन में छोटे, लेकिन सार्थक बदलावों से शुरू होगा, जैसे कि भाषा, पहनावा, खान–पान की आदतें और सांस्कृतिक प्रथाएं। भारत को जानना, स्वीकार करना और दैनिक जीवन में जीना जरूरी है। इस बात पर जोर देते हुए कि आत्म–साक्षात्कार की ऐसी प्रक्रिया के माध्यम से ही एक मजबूत और आत्मविश्वासी भारत की परिकल्पना को साकार किया जा सकता है।

पश्चिमी चश्मे को उतार फेंकने की जरूरत

डॉक्टर भागवत ने कहा कि भारत को यदि वास्तव में समझना है, तो इसे इसकी अपनी सभ्यता और सनातन मूल्यों की दृष्टि से देखना होगा। उन्होंने कहा कि पिछले 150 वर्षों में विकसित हुई पश्चिमी सोच से भारत को नहीं समझा जा सकता। नागरिकों को इस विदेशी विचारधारा की परतों को उतार फेंकना होगा। यदि हम अपने संकल्प के अनुसार कदम दर कदम आगे बढ़ें, तो भारत मजबूत, सदाचारी और वैश्विक मार्गदर्शक बनेगा। भागवत ने कहा कि भारत को सही मायने में समझने के लिए, लोगों को पहले भारत को गहराई से समझना होगा और फिर उसे अपने जीवन में उतारना शुरू करना होगा।

सात सांसद तो झांकी हैं असल 'खेला' बाकी है

- पंजाब के लिए बीजेपी ने फरवरी में ही बिछा दी थी बिसात

नई दिल्ली (एजेंसी)। राघव चड्ढा समेत आम आदमी पार्टी के 7 राज्यसभा सांसदों ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया है। इन सांसदों का बीजेपी में शामिल होना कोई हैरानी की बात नहीं है, क्योंकि पिछले कुछ महीनों से ऐसा माहौल साफ दिखाई दे रहा था कि ये सभी सांसद कुछ ऐसा कदम उठा सकते हैं। पार्टी में शामिल कराने के लिए बीजेपी को सिर्फ समय तय करना था। शुक्रवार को जब राघव चड्ढा, संदीप पाठक और अशोक मित्तल ने कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित किया, तो वहां पर बीजेपी नेताओं की मौजूदगी से तभी स्पष्ट हो गया था कि यह कदम सोच–समझकर लंबी रणनीति के तहत उठाया गया है।

मुख्यमंत्री ने सुशासन भवन में बैठक की

किसान कल्याण वर्ष के तहत किसानों को दी जाने वाली सौगातों, योजनाओं पर हुई चर्चा

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार को राजधानी स्थित अटल बिहारी वाजपेयी सुशासन और नीति विश्लेषण स्कूल में सीनियर अफसरों की अहम बैठक बुलाई थी। बैठक में किसान कल्याण वर्ष के तहत किसानों को दी जाने वाली सौगातों और योजनाओं पर विस्तार से चर्चा हुई।

बताया जा रहा है कि मुख्यमंत्री इस बैठक के बाद सभी कलेक्टरों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए समीक्षा बैठक की।इसमें अधिकारियों को आज हुई बैठक में लिए गए निर्णयों को जमीन पर उतारने के निर्देश दिए जाएंगे।

आगामी योजनाओं पर किया जा रहा था मंथन

मुख्यमंत्री ने किसान कल्याण वर्ष को लेकर सुशासन भवन में नीतिगत फैसलों के लिए आरक्षित रखा था। बैठक में सहकारिता, कृषि, पशुपालन, राजस्व, वित्त, पंचायत एवं ग्रामीण विकास, जल संसाधन, ऊर्जा, कुटीर एवं ग्रामोद्योग समेत सभी संबंधित विभागों के अपर मुख्य सचिव और प्रमुख सचिव स्तर के अधिकारी शामिल हैं। अलग-अलग सेक्टर में किसानों के हित में किए जा सकने वाले कार्यों और आगामी योजनाओं पर मंथन जारी है।

गेहूं खरीदी लक्ष्य में बढ़ोतरी का ऐलान

इससे पहले मुख्यमंत्री ने शुक्रवार रात सोशल मीडिया के माध्यम से प्रदेशवासियों को संबोधित करते हुए कहा था कि सरकार किसानों से किए गए वादों को पूरा कर रही है। उन्होंने बताया कि प्रदेश में रिकॉर्ड गेहूं उत्पादन को देखते हुए केंद्र सरकार से खरीदी सीमा बढ़ाने का अनुरोध किया गया था, जिसे मंजूरी मिल गई है। मुख्यमंत्री के अनुसार गेहूं खरीदी का लक्ष्य 78 लाख मीट्रिक टन से बढ़ाकर 100 लाख मीट्रिक टन कर दिया गया है। 22 लाख मीट्रिक टन की यह बढ़ोतरी किसानों की मेहनत का सम्मान है और उनकी आय बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

संदेश में कहा, अब गेहूं खरीदी सप्ताह में 6 दिन, स्लॉट बुकिंग 9 मई तक

- गेहूं खरीदी के लिए स्लॉट बुकिंग पूरी तरह से खोली जा चुकी है।
- गेहूं खरीदी अब सप्ताह में 6 दिन होगी। शनिवार को अवकाश नहीं रहेगा।
- खरीदी केंद्रों में समर्थन मूल्य पर गेहूं की खरीदी लगातार जारी रहेगी। 30 अप्रैल तक होने वाली स्लॉट बुकिंग को अब 9 मई तक बढ़ा दिया गया है।
- अब किसानों को उनकी भूमि के बदले 4 गुना तक मुआवजा दिया जाएगा।
- उड़द को तय समर्थन मूल्य पर खरीदा जाएगा और किसानों को तय समर्थन मूल्य के अतिरिक्त खरीदी गई उड़द पर 600 रुपए प्रति क्विंटल बोनस राशि भी दी जाएगी।
- किसानों को मात्र पांच रुपए में कृषि पंप का कनेक्शन दिया जा रहा है।
- हमारी योजना है कि अब हमारे किसानों को रात के बदले दिन में ही सिंचाई के लिए पर्याप्त बिजली मिले।
- प्रदेश को मिल्क कैपिटल बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। नई 1752 दुग्ध समितियों का गठन किया है। हमारा प्रतिदिन का दूध संकलन 10 लाख किलोग्राम से अधिक पहुंच गया है और दुग्ध उत्पादक किसानों को 1600 करोड़ रुपए से अधिक की राशि का भुगतान किया गया है।
- किसानों को अब दूध का दाम प्रति किलो 8 से 10 रुपए बढ़कर मिल रहा है।
- इस साल युद्ध की स्थिति के बावजूद प्रदेश में यूरिया की उपलब्धता 5.90 लाख मीट्रिक टन है, जो पिछले साल से भी अधिक है।

भारतीय परिधान में राम मंदिर में प्रवेश करें श्रद्धालु

- अयोध्या में मंदिर ट्रस्ट ने आम जनता व श्रद्धालुओं से की अपील
- पुरुषों को धोती-कुर्ता तो महिलाओं को साड़ी पहनने की दी सलाह

अयोध्या (एजेंसी)। भीषण गर्मी और बढ़ती श्रद्धालु संख्या के बीच श्री राम मंदिर अयोध्या में दर्शन व्यवस्था को अधिक सुगम बनाने के लिए ट्रस्ट ने नई एडवाइजरी जारी की है। ऑनलाइन दर्शन पास बुकिंग के फॉर्मेट में बदलाव किया गया है, जबकि समग्र व्यवस्था पहले की तरह जारी रहेगी। इसके साथ ही श्रद्धालुओं से भारतीय परिधान में दर्शन करने की अपील भी की गई है। गर्मी के कारण दर्शन के समय और भीड़ के पैटर्न में भी बदलाव देखने को मिल रहा है, जिसे ध्यान में रखते हुए प्रशासन व्यवस्थाएं अपडेट कर रहा।

भारतीय परिधान में दर्शन की अपील- मंदिर ट्रस्ट ने श्रद्धालुओं से अपील की है कि वे भारतीय परिधान में मंदिर में प्रवेश करें। पुरुषों के लिए धोती-कुर्ता या धोती-पजामा और महिलाओं के लिए साड़ी, पंजाबी ड्रेस या चूड़ीदार-दुपट्टा पहनने की सलाह दी गई है। हालांकि, इसे अनिवार्य नहीं किया गया है, लेकिन ट्रस्ट ने इसे धार्मिक और सांस्कृतिक मर्यादा के अनुरूप बताया है। श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की वेबसाइट पर दर्शन पास बुकिंग के फॉर्मेट में बदलाव किया गया है। अब सामान्य दर्शन पास के साथ अन्य श्रेणियों के विकल्प भी दिए गए हैं, जिससे श्रद्धालुओं को अपनी सुविधा के अनुसार पास चुनने में आसानी होगी।

भीषण गर्मी का असर दोपहर में घटी भीड़

चिलचिलाती धूप का असर अब मंदिर में दर्शन के समय पर भी साफ दिख रहा है। दोपहर के समय श्रद्धालुओं की संख्या में कमी आई है, जबकि सुबह और शाम के समय भारी भीड़ उमड़ रही है। बाहर से आए श्रद्धालुओं का कहना है कि पहले टेढ़ी बाजार से वाहनों को रोक दिया जाता था, जिससे करीब तीन किलोमीटर पैदल चलकर मंदिर तक पहुंचना पड़ता था। अब येलो जोन पास मिलने से वाहन मंदिर के पास तक छोड़ सकते हैं, जिससे गर्मी में काफी राहत मिली है। पुलिस की नाकेबंदी हटने और येलो जोन पास की सुविधा मिलने से श्रद्धालुओं और स्थानीय लोगों को बड़ी राहत मिली है। अब दर्शन के लिए आने वाले लोग कम समय और कम परेशानी में मंदिर तक पहुंच पा रहे हैं। सामान्य दर्शन पास पर एक साथ पांच लोग दर्शन कर सकते हैं, जिससे परिवार के साथ आने वाले श्रद्धालुओं को सुविधा मिल रही है। ट्रस्ट के अनुसार, सुगम दर्शन पास के सभी स्लॉट 8 मई तक पहले ही बुक हो चुके हैं। हालांकि, अधिक से अधिक लोगों को सुविधा देने के लिए दर्शन पास की संख्या बढ़ाने पर विचार किया जा रहा है, ताकि आमजन को भी अधिक अवसर मिल सके।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 25 °c

न्यूनतम 22°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 26 अप्रैल 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

केसीआर की बेटी के कविता ने बना ली अपनी नई पार्टी

भाई से विवाद के बाद बनाई टीआरएस, लड़ेंगी चुनाव

हैदराबाद (एजेंसी)। तेलंगाना जागृति संगठन की अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव की बेटी के. कविता ने शनिवार को तेलंगाना राष्ट्र सेना (टीआरएस) नामक नए राजनीतिक दल की शुरुआत की। बता दें कि केसीआर की पार्टी के नाम का शॉर्ट फॉर्म भी टीआरएस यानी तेलंगाना राष्ट्र समिति था।

कुछ साल पहले इसे भारत राष्ट्र समिति कर दिया गया। कविता ने हैदराबाद के बाहरी इलाके में आयोजित एक कार्यक्रम में अपनी पार्टी के नाम की घोषणा की। सितंबर 2025 में कविता को बीआरएस से तब निलंबित कर दिया गया था जब उन्होंने अपने चचेरे भाई एवं पार्टी नेता टी. हरीश राव तथा रिश्तेदार जे. संतोष कुमार पर बीआरएस के शासन के दौरान निर्मित कालेश्वरम लिफ्ट सिंचाई परियोजना को लेकर अपने पिता और बीआरएस अध्यक्ष के. चंद्रशेखर राव की छवि को खराब करने का आरोप लगाया था। निलंबन के बाद से वह तेलंगाना जागृति नामक अपने नेतृत्व वाले सांस्कृतिक संगठन के बैनर तले सार्वजनिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित कर रही हैं। उनके पिता के नेतृत्व वाली भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) का मूल नाम तेलंगाना राष्ट्र समिति (टीआरएस) था।

मणिपुर में नागा-कुकी झड़पों में 3 लोगों की मौत

- दोनों पक्ष एक-दूसरे पर लगा रहे हमले के आरोप

नई दिल्ली (एजेंसी)। मणिपुर के उखरुल जिले में शुक्रवार तड़के नागा और कुकी-जो समुदायों के सशस्त्र समूहों के बीच दो अलग-अलग गोलीबारी की घटनाओं में तीन लोगों की मौत हो गई और कम से कम पांच लोग घायल हुए। मरने वालों में एक तांगखुल नागा और दो कुकी-जो समुदाय के व्यक्ति शामिल हैं। दोनों समुदाय एक-दूसरे पर हमला शुरू करने का आरोप लगा रहे हैं। तांगखुल नागा लॉन्ग (टीएनएल) के अनुसार, 29 वर्षीय होर्शोकमी जमंग नामक नागा ग्राम रक्षक को सशस्त्र कुकी उग्रवादियों ने घात लगाकर मार डाला। जमंग सिनाकेइथेई गांव के पास गश्त

पर थे। इस घटना में चार अन्य नागा स्वयंसेवक भी गंभीर रूप से घायल हुए। सुरक्षा बलों ने दो कुकी-जो युवकों के शव बरामद किए। मृतकों की पहचान पाओमिनलुन हाओलाई (19 वर्ष) और लेटलाल सिटलहो (43 वर्ष) के रूप में हुई। कुकी संगठनों ने दावा किया कि तांगखुल नागा उग्रवादियों ने मुल्लम और शोंगफाल गांवों पर तड़के करीब 5.30 बजे हमला किया, जिसमें दो स्वयंसेवक मारे गए। कांगपोकपी जिले की बुंगी-इहान रक्षा समिति ने इसे कुकी गांवों पर हमला बताया। कुकी इनपी मणिपुर ने आरोप लगाया कि हमले में कई घर जलाए गए, महिलाएं और बच्चे समेत कई लोग घायल हुए तथा कई परिवार विस्थापित हो गए।

मुंबई-अहमदाबाद की तर्ज पर सूरत में चलेगी डबल डेकर

- वडोदरा में 100 फीसदी इलेक्ट्रिक बसों की डिलीवरी शुरू

अहमदाबाद (एजेंसी)। गुजरात की डायमंड सिटी सूरत में मुंबई और अहमदाबाद की तर्ज पर डबल डेकर बस चलेगी। शहर में ट्रायल रन डबल डेकर पहुंच भी गई है, लेकिन राज्य में स्थानीय निकाय चुनावों की आचार संहिता के चलते लोगों को इस बस के सफर के लिए इंतजार करना पड़ेगा। कुछ ऐसी ही स्थिति वडोदरा की है। वडोदरा में नगर निगम ने पीएम ई-बस सेवा के तहत 250 बसें चलाने का लक्ष्य रखा है।

पहले फेज की 40 बसों की बसों की डिलीवरी शुरू हो गई है, पहली सात शहर पहुंच गई हैं, लेकिन ये बसें अभी पूजा करने के बाद डिपो में खड़ी कर दी गई हैं। 100 फीसदी इलेक्ट्रिक बसों का संचालन स्थानीय निकाय चुनावों की प्रक्रिया पूरी होने और शहर में मेयर की नियुक्ति होने के बाद होने की उम्मीद की जा रही है। वडोदरा नगर निगम के कमिश्नर अरुण महेश बाबू के अनुसार बताया कि आदर्श आचार संहिता लागू है, लेकिन इन बसों के रूट और टिकटिंग को लेकर निगम का कर रहा है। उन्होंने कहा कि चुनाव खत्म होने और पीएमओ से समय मिलते ही इन बसों का शुभारंभ हो जाएगा। गौरतलब हो कि 2030 कॉमनवेल्थ गेम्स को देखते हुए जहां अहमदाबाद में नई सुविधाएं जोड़ी जा रही है तो वहीं दूसरी बुलेट ट्रेन के मैप पर आने वाले शहरों में सरकार की तरफ इंफ्रास्ट्रक्चर को पुश किया जा रहा है। अहमदाबाद, सूरत और वडोदरा तीनों शहरों में बुलेट ट्रेन के स्टेशन भी बन रहे हैं। इन्हें जोड़ने वाली सड़कों को वर्ल्ड क्लास बनाने की तैयारी है।

अभी दो शहरों में दौड़ती है डबल डेकर

डबल डेकर बस का नाम आते ही मन में मुंबई की छवि उभरती है, लेकिन अगर सूरत में डबल डेकर बस का संचालन होता है तो यह गुजरात का तीसरा शहर होगा। सूरत में पुराने वक्त पर डबल डेकर चलती थी। ऐसे में यह शहर के लिए डबल डेकर की घर वापसी जैसा है। अहमदाबाद में पहले से डबल डेकर बस चल रही है। इसके बाद पीएम मोदी के ड्रीम प्रोजेक्ट गांधीनगर के पास भी डेबल डेकर बस की कनेक्टिविटी है। सूरत गुजरात का तीसरा शहर बनेगा। सूरत में डबल डेकर बस को लेकर काफी रोमांच है। सूरत में अहमदाबाद की तर्ज पर बीआरटीएस भी है।

भीषण गर्मी का कहर लेकर आ रहा अल-नीनो

- मई से दिखने लगेगा असर, डब्ल्यूएमओ का अलर्ट जारी
- हिंदू कुश हिमालय में बर्फ की कमी, जल सुरक्षा खतरे में

नई दिल्ली (एजेंसी)। विश्व मौसम विज्ञान संगठन ने चेतावनी दी है कि एल नीनो की स्थिति मई से जुलाई के बीच विकसित हो सकती है, जिससे भारत समेत दक्षिण एशिया में मौसम पर बड़ा असर पड़ेगा। पहले अनुमान था कि यह स्थिति मानसून के दूसरे हिस्से (अगस्त-सितंबर) में बनेगी, लेकिन अब इसके जल्दी आने की संभावना जताई गई है। अल नीनो एक ऐसी जलवायु स्थिति है, जो हर 2 से 7 साल में आती है और करीब 9 से 12 महीने तक रहती है। इसके कारण दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में तापमान और बारिश के पैटर्न बदल जाते हैं और आमतौर पर वैश्विक तापमान बढ़ता है। भारत मौसम विज्ञान विभाग पहले ही इस साल सामान्य से कम बारिश का अनुमान दे चुका है। डब्ल्यूएमओ के अनुसार, भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर में समुद्र की सतह का तापमान तेजी से बढ़ रहा है, जिससे अगले महीने एल नीनो की स्थिति बनने के संकेत मिल रहे हैं।

हिमालय में बर्फ कम, बढ़ी चिंता

रिपोर्ट के अनुसार, हिंदू कुश हिमालय क्षेत्र में इस साल बर्फ की मात्रा सामान्य से 27.8 फीसदी कम रही है, जो पिछले 20 सालों में सबसे कम है। इससे नदियों के पानी पर असर पड़ सकता है और करीब 2 अरब लोगों की जल सुरक्षा को खतरा हो सकता है। आमतौर पर एल नीनो के दौरान ऑस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया और भारत के कुछ हिस्सों में कम बारिश या सूखे की स्थिति बनती है। वहीं दक्षिण अमेरिका, अमेरिका के दक्षिणी हिस्सों, अफ्रीका के कुछ क्षेत्रों और मध्य एशिया में ज्यादा बारिश देखने को मिलती है।

हर जगह बढ़ सकती है गर्मी

डब्ल्यूएमओ ने कहा है कि मई-जून-जुलाई के दौरान जमीन का तापमान सामान्य से ज्यादा रहने की संभावना है। यानी लगभग हर जगह ज्यादा गर्मी पड़ सकती है। संस्था का मानना है कि ऐसे मौसम पूर्वानुमान कृषि, जल प्रबंधन, ऊर्जा और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों के लिए बेहद जरूरी होते हैं, ताकि समय रहते तैयारी की जा सके। डब्ल्यूएमओ के जलवायु पूर्वानुमान प्रमुख विलफ्रान मौफूमा ओकिया ने कहा कि साल की शुरुआत में तटस्थ स्थिति थी, लेकिन अब सभी मॉडल एल नीनो बनने की पुष्टि कर रहे हैं और आने वाले महीनों में इसके और मजबूत होने की संभावना है।

पंजाब सीएम ने राष्ट्रपति से मिलने का मांगा समय

- सभी एमएलए साथ ले जाएंगे, राष्ट्रपति भवन में कराएंगे परेड
- भगवंत मान सात सांसदों के राइट टू रिकॉल की मांग भी करेंगे

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब के सीएम भगवंत मान ने 7 एएपी सांसदों के पार्टी छोड़ने को लेकर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात का टाइम मांगा है। पंजाब सीएम ऑफिस से जुड़े सोर्सेज के मुताबिक सीएम मान पंजाब के सभी विधायकों को लेकर दिल्ली जाकर राष्ट्रपति से मिलना चाहते हैं। वह पार्टी बदलने वाले 7 सांसदों के राइट टू रिकॉल की मांग करेंगे और इस पर अपना पक्ष रखेंगे।

इसके अलावा एएपी के राज्यसभा सांसद संजय सिंह उपराष्ट्रपति से मिलेंगे। जहां वे पार्टी छोड़ने वाले सांसदों की सदस्यता रद्द करने की मांग करेंगे। संजय सिंह और पंजाब के वित्तमंत्री हरपाल चीमा ने कहा कि सिर्फ 3 ही सांसद भाजपा में शामिल हुए हैं। बाकी 4 अभी उनकी ही पार्टी में हैं। राघव चड्ढा ने कल दावा किया था कि उनकी पार्टी के राज्यसभा में 10 सांसद हैं। इनमें से दो तिहाई यानी 7 सांसद हमारे साथ हैं। ऐसे में हमारे ऊपर दलबदल कानून लागू नहीं होता। इसे खारिज करते हुए वित्तमंत्री चीमा ने कहा कि सिर्फ 3 ही सांसद भाजपा में गए हैं। 2 सांसदों स्वाति मालीवाल और राजिंदर गुप्ता के फर्जी साइन किए गए हैं।

दरअसल, कल पंजाब में 2027 के विधानसभा चुनाव से पहले आम आदमी पार्टी के 10 राज्यसभा सांसदों में से 7 सांसदों ने कल (24 अप्रैल) पार्टी छोड़ दी। इनमें से 6 पंजाब से हैं। पार्टी छोड़ने के बाद पंजाब से राज्यसभा सांसद राघव चड्ढा ने शुक्रवार शाम को ही सांसद अशोक मित्तल और संदीप पाठक के साथ बीजेपी जॉइन कर ली।

टीएमसी सरकार से मुक्ति का समय आ गया है

- योगी बोले-4 मई के बाद बंगाल में टीएमसी के गुंडों को कहीं छुपने की जगह नहीं मिलने वाली है

लखनऊ/कोलकाता (एजेंसी)। टीएमसी ने नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) का विरोध किया। इस अधिनियम से पाकिस्तान और बांग्लादेश से परेशान होकर आए हिंदू, बौद्ध और जैनों को भारत की नागरिकता मिलेगी, लेकिन ममता दीदी को बुरा लगता है कि अगर हिंदू ज्यादा होंगे तो सड़क पर इफ्तारी कैसे होगी। यूपी में कोई सड़क पर इफ्तार पार्टी नहीं कर सकता, नमाज भी नहीं पढ़ सकता। मस्जिद से कोई आवाज भी नहीं आती। टीएमसी सरकार से मुक्ति का समय आ गया है। 4 मई को जब रिजल्ट आएगा तो टीएमसी के गुंडों को कहीं छुपने की जगह नहीं मिलने वाली है।

सीएम योगी ने शनिवार को पश्चिम बंगाल में चुनावी रैली में ये बातें कहीं। उन्होंने नदिया जिले की नवद्वीप और पूर्व वर्धमान जिले की कटवा सीट पर चुनाव प्रचार किया। इसके बाद उत्तर 24 परगना जिले में जनसभा को संबोधित करेंगे।

'ममता को बंगाल में जय श्रीराम बोलने से परेशानी'- सीएम योगी ने कहा- बंगाल विभाजन के समय वंदे मातरम् हर बंगाली का हथियार बना था, लेकिन ममता दीदी को इन सबसे चिढ़ है। बंगाल में जय श्रीराम बोलने से उन्हें परेशानी होती है। कोलकाता हाईकोर्ट को आदेश देना पड़ा था कि जो लोग दुर्गा पूजा में अव्यवस्था फैला रहे हैं, उन्हें रोका जाए। उन्होंने कहा- बंगाल में माफिया राज की प्रतीक बनी यह सरकार कुछ सुनने को तैयार नहीं है।

'यूपी में न कर्फ्यू है, न दंगा है, यूपी में सब चंगा है'

सीएम ने कहा- कभी भारत की अर्थव्यवस्था में बंगाल का सबसे ज्यादा योगदान था। बेटियां और बहनें सुरक्षित हुआ करती थीं, लेकिन अब गुंडा टैक्स वसूला जा रहा है।

कैटल माफिया, सैंड माफिया और लैंड माफिया बढ़ रहे हैं। उन्होंने कहा- 2017 तक यूपी में भी यही स्थिति थी। व्यापारी पलायन कर रहे थे, लव जिहाद और लैंड जिहाद की घटनाएं बढ़ती जा रही थीं। जय श्रीराम बोलने पर लाठी और गोली चलती थी। आज यूपी में डबल इंजन सरकार है। आज यूपी में न कर्फ्यू है, न दंगा है, यूपी में सब चंगा है।

'यूपी का बुलडोजर माफिया को मिट्टी में मिला देता है'- योगी ने कहा- अयोध्या में भगवान राम की जन्मस्थली पर भव्य मंदिर बन चुका है। कांग्रेस, कम्युनिस्ट और टीएमसी रोक नहीं पाए। यूपी में अब रोपवे बन रहे हैं।

बंगाल के सामने पहचान का संकट

योगी ने कहा- जिस बंगाल ने भारत को पहचान दी, आज उसी के सामने पहचान का संकट है। टीएमसी की सरकार 15 सालों में माफिया राज, आतंक और भ्रष्टाचार का प्रतीक बन चुकी है। उसके गुंडे सरेआम घूम रहे हैं। सीएम ने कहा कि दो दिन पहले पहले चरण की वोटिंग में लोगों ने रिकॉर्ड मतदान किया। अभी से जो बातें सुनाई दे रही हैं, जो नजारे दिखाई दे रहे हैं। 4 मई को जब नतीजे आएंगे, तब चारों ओर भगवा झंडा लहराता दिखेगा।

रिफाइनरी में आग, 'साइबर अटैक' की है प्रबल आशंका

- ऑटोमेटिक कंट्रोल यूनिट्स हाईजैक तो नहीं हुए होगी जांच
- आसपास रहने वालों का पुलिस ने शुरू किया वेरिफिकेशन

बाड़मेर (एजेंसी)। देश की सबसे आधुनिक और हाईटेक बालोतरा की पचपदरा रिफाइनरी में 20 अप्रैल को लगी आग के बाद

सुरक्षा एजेंसियां ऐक्टिव हैं। इस हादसे को साइबर अटैक से भी जोड़कर देखा जा रहा है। जांच एजेंसियां इस एंगल पर भी जांच को आगे बढ़ा रही हैं। आशंका जताई जा रही है कि हादसे के वक्त रिफाइनरी के ऑटोमेटिक कंट्रोल यूनिट्स को बाहर से हाईजैक कर लिया गया होगा। सुरक्षा एजेंसियां अब रिफाइनरी के डिजिटल लॉग्स और डेटा को खंगाल रही हैं। एक्सपर्ट्स यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि क्या किसी बाहरी आईपी एड्रेस ने सिस्टम में सेंध लगाने की कोशिश तो नहीं की थी। उधर, आसपास के इलाके में रहने वाले लोगों का पुलिस वेरिफिकेशन भी किया जा रहा है। रिफाइनरी में आग पीएम के दौरे से पहले लगी।

- **पास वाली दुकानें हट सकती हैं, सुरक्षा घेरा बढ़ा-** हादसे के बाद सुरक्षा एजेंसियां और बालोतरा पुलिस पूरी तरह ऐक्टिव मोड में है। सूत्रों के मुताबिक, रिफाइनरी के 1 किलोमीटर के दायरे में आने वाली दुकानों और कमर्शियल संस्थानों को सुरक्षा कारणों से हटाया जा सकता है। दावा है कि यहां दिनभर भीड़ रहती है, जो सुरक्षा के लिहाज से बड़ा खतरा है।

- नशे के खिलाफ श्रीनगर पुलिस का महा अभियान

तस्करों की 3.5 करोड़ रुपए की संपत्ति जब्त, आतंकवाद की टूट रही कमर

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू कश्मीर की श्रीनगर पुलिस ने शनिवार को बड़ी कार्रवाई की है। पुलिस ने नशीली दवाओं के खिलाफ तेज कार्रवाई में एक ड्रग तस्कर से संबंधित 3.5 करोड़ रुपये की संपत्ति जब्त कर ली। पुलिस के एक बयान में कहा गया है कि मादक पदार्थों की तस्करी के खिलाफ श्रीनगर पुलिस अपनी कार्रवाई को जारी रखे हुए है।

राज्य में चल रहे नशा मुक्त अभियान के तहत श्रीनगर पुलिस ने मादक पदार्थों के तस्करों से संबंधित 3.5 करोड़ रुपये की अचल संपत्तियों को जब्त कर लिया है। एनडीपीएस अधिनियम की धारा 68-एफ के प्रावधानों के तहत कार्रवाई करते हुए संगम पुलिस स्टेशन ने एनडीपीएस अधिनियम की धारा 8/20 और 29 के तहत एफआईआर संख्या 56/2025 में शामिल आरोपियों से जुड़ी दो अचल संपत्तियों को जब्त कर लिया। जब्त की गई संपत्तियों के विवरण में आरोपी शकील अहमद गनी की कनाल की जमीन शामिल है।

आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करेगा यह आंदोलन- जम्मू और कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने शनिवार को सांबा में आयोजित नशा-विरोधी अभियान में भाग लिया। उन्होंने एक पोस्ट में कहा कि आज सांबा में भारी जनसमूह ने नशामुक्त जम्मू-कश्मीर अभियान में भाग लिया और समाज से नशा मिटाने का संकल्प लिया। सभा को संबोधित करते हुए मैंने दोहराया कि यह 100 दिवसीय आंदोलन आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करेगा और इस बात का प्रमाण होगा कि जब लोग एकजुट होते हैं, तो वे इतिहास बदल सकते हैं।

कार्यालय तहसीलदार प्रभातपट्टन, जिला बैतूल

रा.प्र.क्र.100/अ/6 वर्ष 2025-26 मौजा- बोरगांव उर्फ शेरगढ़

1. हरप्रीत खुराना पिता आजादसिंग खुराना, निवासी विवेकानंद वार्ड मेन रोड मुलताई, जिला बैतूल

// बनाम //

1. सहादेव पुत्र जंगली पंवार
2. रामकृष्णा पुत्र जगली
3. फागू पुत्र दशरया
4. कारू पुत्र फुस्या
5. मुन्ना पुत्र फुस्या
6. कुसुम पुत्री फुस्या
7. ललिता पुत्री फुस्या
8. वेला पुत्री फुस्या
9. फूलवती बेवा शेषराव
10. मनोज पुत्र शेषराव
11. रोशनी पुत्र शेषराव
12. राधा पुत्री शेषराव
13. शीतल पुत्री शेषराव
14. दुर्गा पुत्री जंगली
15. रामप्यारी पुत्री जगली
16. बिरज पुत्र दशरया
17. जिरा बेवा दशरया
18. मयकूलाल पुत्र दशरया
19. मनोहर डहारे
20. मनीराम डहारे

सभी निवासी बोरगांव उर्फ शेरगढ़ तहसील प्रभातपट्टन, जिला बैतूल

//सूचना पत्र//

आपको सूचित किया जाता है कि आवेदिका हरप्रीत खुराना पिता आजादसिंग खुराना निवासी विवेकानंद वार्ड, मेन रोड मुलताई, जिला बैतूल द्वारा मौजा बोरगांव उर्फ शेरगढ़ की भूमि खसरा नंबर 503/1/2/1, 503/1/1/, 503/1/2/2 रकबा 1.416, 5.670, 0.233 हे. भूमि में से अनावेदकगणों का नाम निरस्त कर सिविल न्यायालय के निर्णय अनुसार डिक्रीधारी आवेदिका के दादा करमसिंग पिता सरदारसिंग (मृतक) के स्थान पर आवेदिका हरप्रीत खुराना पिता आजादसिंग का नाम राजस्व अभिलेखों में दर्ज किए जाने हेतु आवेदन प्रस्तुत किया गया है। अतः उक्त संबंध में इस न्यायालय में दिनांक 29/04/2026 को उपस्थित होकर मय दस्तावेजों आप स्वयं अथवा अपने अधिवक्ता के माध्यम से अपना पक्ष रख सकते है। अनुपस्थित की दशा में एकपक्षीय कार्यवाही की जावेगी।

सील तहसीलदार, प्रभातपट्टन

कान्हा टाइगर रिजर्व में बाघिन टी-122 के बाद 'जुड़वा' बाघ शावकों की मौत

आठ महीने में 9 बाघ 5 तेंदुओं की गई जान

मंडला (नप्र)। मध्य प्रदेश के प्रमुख वन्य क्षेत्र कान्हा टाइगर रिजर्व में बाघों की लगातार हो रही मौतों ने चिंता और बढ़ा दी है। सरही इलाके में एक नर बाघ शावक का शव मिलने से वन विभाग में हड़कंप मच गया। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार यह शावक उसी का भाई बताया जा रहा है, जिसकी दो दिन पहले 21 अप्रैल को मौत हुई थी। कम अंतराल में दो शावकों की मौत ने वन्यजीव प्रबंधन और संरक्षण व्यवस्था को लेकर कई सवाल खड़े कर दिए हैं।

बाघ शावक का शव ईंटावारे नाला के पास घनी झाड़ियों में पड़ा मिला। सूचना मिलते ही वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची और पूरे क्षेत्र में सघन तलाशी अभियान शुरू किया गया। हाथियों की मदद से इलाके की घेराबंदी की गई, वहीं डॉग स्क्वॉड की सहायता से आसपास के क्षेत्र की बारीकी से जांच की गई ताकि किसी प्रकार की संदिग्ध गतिविधि, शिकार या जहर देने जैसी संभावना से इंकार किया जा सके। डॉक्टरों की टीम ने मौके पर ही शावक का पोस्टमार्टम किया, लेकिन शव काफी सड़ चुका होने के कारण मौत के कारणों का तत्काल पता नहीं चल सका। ऐसे में वन विभाग ने शावक का विसरा सुरक्षित कर जांच के लिए प्रयोगशाला भेज दिया है।

कान्हा टाइगर रिजर्व के आंकड़े चिंता में डाल रहे

- कान्हा टीआर में 8 महीनों में 9 बाघों और 5 लेपर्ड की मौत
- अप्रैल महीने में एक बाघिन और दो शावकों की मौत
- दो दिन में दूसरे शावक की मौत से हड़कंप
- एक ही बाघिन के दोनों जुड़वा शावक की मौत
- अप्रैल के प्रारंभ में बाघिन टी-122 मृत मिली थी

कान्हा टाइगर रिजर्व में पिछले कुछ महीनों के आंकड़े भी चिंता बढ़ाने वाले हैं। बीते आठ महीनों में यहां 9 बाघों और 5 तेंदुओं की मौत दर्ज की जा चुकी है। वहीं अप्रैल माह में ही बाघिन टी-122 सहित दो शावकों की जान जा चुकी है। इतनी बड़ी संख्या में हो रही मौतों ने वन्यजीव प्रेमियों और विशेषज्ञों को चिंतित कर दिया है। नियमानुसार पोस्टमार्टम के बाद अधिकारियों और गवाहों की मौजूदगी में शावक के शव का मौके पर ही अंतिम संस्कार कर दिया गया। फिलहाल वन विभाग पूरे मामले की गंभीरता से जांच कर रहा है और विसरा रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के वास्तविक कारणों का खुलासा हो सकेगा।

मौत की वजह अब तक साफ नहीं

डॉक्टरों की टीम ने शावक का पोस्टमार्टम किया, लेकिन शव काफी सड़ चुका था। ऐसे में प्रारंभिक जांच में मौत का कारण स्पष्ट नहीं हो सका। वन विभाग ने शावक का विसरा सुरक्षित कर जांच के लिए भेज दिया है। रिपोर्ट आने के बाद ही यह साफ हो पाएगा कि मौत आपसी संघर्ष में हुई, किसी बीमारी के कारण हुई या कोई अन्य वजह रही। कान्हा टाइगर रिजर्व प्रबंधन अधिकारी ने बताया कि रिजर्व के अंदर नाले के पानी में बाघ शावक का शव मिला है, वह काफी बुरी हालत में था, इसलिए फिलहाल मौत के कारणों का पता नहीं चल पाया। बिसरा जांच के लिए भेजे हैं।

आंकड़े बढ़ा रहे चिंता

कान्हा टाइगर रिजर्व में पिछले कुछ महीनों में वन्यजीवों की मौत के आंकड़े चिंताजनक हैं। पिछले 8 महीनों में 9 बाघों की मौत इसी अवधि में 5 तेंदुओं की भी मौत अकेले अप्रैल में ही बाघिन टी-122 और दो शावकों की मौत लगातार हो रही इन घटनाओं से पार्क प्रबंधन और वन्यजीव विशेषज्ञों में चिंता बढ़ गई है।

नियमों के तहत किया गया अंतिम संस्कार

पोस्टमार्टम के बाद वन विभाग ने निर्धारित प्रक्रिया का पालन करते हुए अधिकारियों और गवाहों की मौजूदगी में शावक के शव का मौके पर ही अंतिम संस्कार किया।

हर जरुरतमंद को मिलेगा सरकारी योजनाओं का लाभ : मंत्री तोमर

ऊर्जा मंत्री ने जनसुनवाई में किया समस्याओं का निराकरण

भोपाल (नप्र)। जन-जन की सेवा ही मध्यप्रदेश की सरकार का मूलमंत्र है और इसे साकार करते हुए ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने शनिवार को अपने रेसकोर्स रोड स्थित 38 नम्बर सरकारी कार्यालय पर आयोजित जनसुनवाई के दौरान समस्याओं को सुना और उनका त्वरित निदान किया।

ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने कहा कि आपका यह सेवक जिस मुकाम पर है, वह आप सभी के आशीर्वाद का ही प्रतिफल है। उन्होंने कहा कि सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ मिल रहा है। यह उनका हक है, जो मध्यप्रदेश की कर्मशील सरकार द्वारा दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि हर जरुरतमंद के चेहरे पर खुशहाली लाना प्रदेश सरकार का संकल्प है। इसकी पूर्ति के लिए हम सभी को मिलकर प्रयास करने होंगे।

ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अंतिम छोर के अंतिम व्यक्ति तक सरकार की योजनाओं का लाभ पहुंचे इसके लिए हर जिला, तहसील स्तर पर जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ दिया जा रहा है। इस दिशा में सरकार सतत प्रयत्नशील है। जन सेवा ही हमारा संकल्प है। उन्होंने दोहराया कि हर जरुरतमंद के चेहरे पर खुशहाली लाना ही हमारा लक्ष्य है। उन्होंने कहा कि विकास का यह सिलसिला अभी थमने वाला नहीं है। शहर के प्रत्येक नागरिक को अच्छी शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवा मुहैया कराना ही शासन की प्राथमिकता है। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने आहवान किया कि हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि अपने जीवन में स्वच्छता को अपनाएंगे और एक नया स्वस्थ, हरा-भरा, नशा मुक्त समाज बनाएंगे। उन्होंने कहा कि हमें अपने शहर को साफ और सुंदर बनाने के लिए साथ मिलकर अपना सहयोग देना होगा। उन्होंने मौजूद प्रशासन, नगर निगम, विद्युत विभाग से सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देश दिए कि हर आवेदक की समस्या का प्राथमिकता के आधार पर समाधान करें।

मिट्टी की कोख जला रहे हैं किसान, पराली जलाने में मप्र अब भी देश में टॉप पर

विदिशा (नप्र)। उत्तर भारत में गर्मी के साथ-साथ खेतों की आग ने भी अपनी तपिश बढ़ा दी है। ताजा आंकड़ों के अनुसार, उत्तर प्रदेश का सिद्धार्थनगर जिला अब देश में पराली जलाने का सबसे बड़ा केंद्र बनकर उभरा है। 1 अप्रैल से 23 अप्रैल के बीच सिद्धार्थनगर में पराली जलाने की 3,078 घटनाएं दर्ज की गईं, जो पूरे देश में सबसे अधिक हैं। इसने मध्य प्रदेश के विदिशा को दूसरे नंबर पर धकेल दिया है, जहां 3,037 मामले सामने आए हैं।

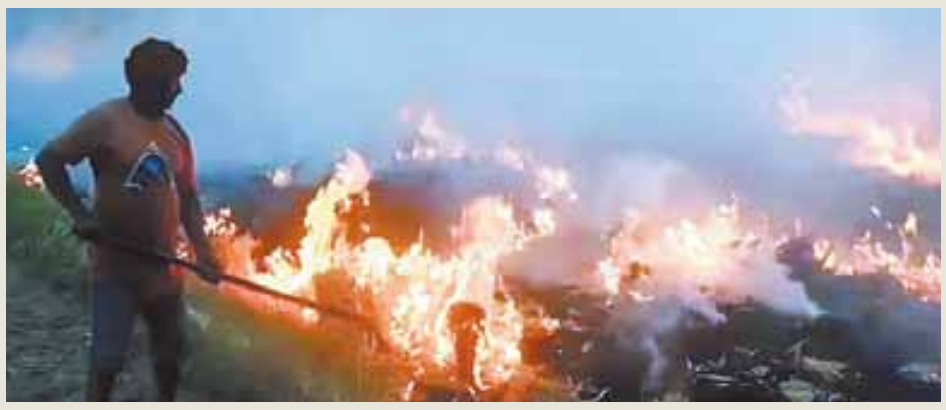

उत्तर प्रदेश में दोगुना हुआ धुआं

सिद्धार्थनगर का यह रिकॉर्ड नया नहीं है, 2024 में भी यहां सबसे अधिक घटनाएं देखी गई थीं। लेकिन चिंता की बात यह है कि पूरे उत्तर प्रदेश में इस साल आग की रफ्तार दोगुनी हो गई है। पिछले साल इसी अवधि में जहां 5,965 मामले थे, वहीं इस बार यह आंकड़ा 10,604 तक पहुंच गया है। यह देश में सबसे तीव्र वृद्धि है।

मध्य प्रदेश अभी भी विजेता

भले ही विदिशा जिला दूसरे स्थान पर आ गया हो, लेकिन राज्य के तौर पर मध्य प्रदेश अब भी पराली जलाने में भारत का सिरमौर बना हुआ है। इस सीजन में अब तक एमपी में 25,144 घटनाएं हुई हैं, जो पिछले साल (22,818) से 10 प्रतिशत ज्यादा हैं। चौंकाने वाली बात यह है कि मध्य प्रदेश में अकेले इतनी पराली जलाई जा रही है, जितनी पंजाब, हरियाणा, यूपी और दिल्ली को मिलाकर भी नहीं जलाई जाती।

क्यों डरे हुए हैं वैज्ञानिक?

- खेती के अवशेषों को जलाना केवल हवा को जहरीला नहीं बनाता, बल्कि यह सीधे तौर पर किसान की जेब और ज़मीन पर हमला है।
- मिट्टी की उर्वरता- आग से ज़मीन के मित्र बैक्टीरिया और सूक्ष्मजीव मर जाते हैं।
- जहरीली गैसें- पराली जलने से कार्बन डाइऑक्साइड और नाइट्रोजन ऑक्साइड जैसी गैसें निकलती हैं जो ग्लोबल वार्मिंग बढ़ाती हैं।
- अगली फसल पर असर- ज़मीन की नमी खत्म होने से अगली फसल की उत्पादकता गिर जाती है।

महिला ने बेटे और दोस्त से सहेली का रेप कराया, पीड़िता जिस होटल में काम करती है वहीं बंधक बनाया, पिटवाया, बोली- मेरे बॉयफ्रेंड से दूर रहो

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कोलार इलाके में एक होटल की रिसेप्शनिस्ट के साथ इसी होटल की पूर्व रिसेप्शनिस्ट ने रेप करा दिया। आरोपी महिला ने अपने बेटे और बेटे के दोस्त को प्लानिंग के तहत होटल भेजा और रूम बुक कराया। बाद में युवकों ने रूम में पानी न आने की समस्या बताई। पीड़ित युवती रूम में पानी चेक करने पहुंची तो वहीं उसे बंधक बना लिया गया। दोनों युवकों ने बारी-बारी से उसके साथ रेप किया। उसके प्राइवेट पार्ट से भी छेड़छाड़ की गई।

बाद पूर्व रिसेप्शनिस्ट कमरे पर पहुंची और पीड़िता को घटना के संबंध में किसी को भी बताने पर जान से मारने की धमकी दी। इसके बाद दोनों युवकों की मदद से पीड़िता को किडनैप कर स्टेशन बजरिया इलाके में ले गए। यहां भी पीड़िता के साथ मारपीट की गई। आरोपी महिला ने पीड़िता से कहा कि मेरे बॉयफ्रेंड से दूर रहो। दरअसल दोनों ही महिलाओं का एक होटल मालिक से अफेयर है, जो इन दिनों ग्वालियर में है। पीड़िता और होटल मालिक की कॉल पर बात होती है।

ग्रेजुएशन के बाद रिसेप्शनिस्ट की जॉब शुरू की- पुलिस के मुताबिक 23 वर्षीय युवती बी.कॉम ग्रेजुएट है और एक होटल में रिसेप्शनिस्ट है। शुक्रवार रात करीब 9 बजे वह होटल में ड्यूटी पर थी। तभी आरोपी बिट्टू और एक युवक होटल पहुंचा। वहां आरोपियों ने होटल में कमरा दिखाने के लिए कहा, तो

पीड़िता उनके साथ चली गई। कुछ ही देर में आरोपियों ने आवाज देकर दोबारा पीड़िता को बुलाया और पानी न आने की शिकायत की। कमरे में जाते ही आरोपी बिट्टू ने युवती के साथ रेप किया।

महिला आरोपी ने भी कमरे में बंधक बनाकर पीटा- बिट्टू के दोस्त ने पीड़िता के प्राइवेट पार्ट में छेड़खानी की। कुछ ही देर में इसी होटल की पूर्व रिसेप्शनिस्ट विनिता भी रूम में पहुंच गई। जिसने एक युवक को बेटा जबकि बिट्टू को बेटे का दोस्त बताया। आज के बाद उसके बॉयफ्रेंड (होटल मालिक) से दूर रहने की नसीहत दी। उसके साथ जमकर मारपीट की। तीनों आरोपी पीड़िता को अगवा कर साथ ले गए। अपहरण की यह वारदात स्कूटी से अंजाम दी।

होटल स्टॉफ ने पुलिस को सूचना दी- पूरे घटनाक्रम की सूचना होटल स्टॉफ ने पुलिस को दी। जिसके बाद पुलिस ने पीड़िता की मोबाइल लोकेशन ट्रेस कर उसे स्टेशन बजरिया इलाके से दस्तेयाब किया। आरोपियों के डर से पीड़िता कुछ बताने को राजी नहीं थी। जिसके बाद थाने लाकर पीड़िता की काउंस्लिंग कराई गई। तब उसने पूरा घटनाक्रम पुलिस को बताया। शनिवार तड़के पीड़िता की शिकायत पर रेप, बंधक बनाने, अपहरण करने और मारपीट की धाराओं में एफआईआर दर्ज कर ली। पुलिस की घेराबंदी के बीच दोनों युवक फरार हो गए। विनिता को पुलिस ने हिरासत में ले लिया है।

आरोपियों की तलाश में थाने की दो टीमें जुटी - टीआई संजय सोनी ने बताया कि आरोपियों की तलाश में थाने की दो टीमें जुटी हैं। विनिता को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। पीड़िता ने कथनों में होटल रूम में बंधक बनाकर मारपीट और प्राइवेट पार्ट से छेड़छाड़ कर रेप करने की बात कही है। जल्द फरार आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

अस्पताल के बाहर पंचर खड़ी थी एंबुलेंस, 100 किमी दूर से आई दूसरी

5 घंटे इंतजार कर गर्भवती ने तोड़ा दम

छिंदवाड़ा (नप्र)। जिले के तामिया ब्लॉक से एक बेहद दुखद और चिंताजनक मामला सामने आया है, जहां समय पर एम्बुलेंस न मिलने और स्वास्थ्य सुविधाओं की लापरवाही के कारण एक गर्भवती महिला की जान चली गई। घटना टॉपरवानी गांव की है, जिसने एक बार फिर ग्रामीण स्वास्थ्य व्यवस्था की पोल खोल दी है।

प्रसव पीड़ा के बाद शुरू हुआ संघर्ष- गुरुवार को टॉपरवानी निवासी शारदा उइके, पति देवी सिंह उइके को अचानक प्रसव पीड़ा शुरू हुई। परिजनों ने तुरंत जननी 108 एम्बुलेंस को कॉल किया, लेकिन उन्हें जवाब मिला कि चावलपानी में एम्बुलेंस उपलब्ध नहीं है।

पीएचसी के सामने खड़ी थी पंचर एम्बुलेंस- हैरानी की बात यह रही कि चावलपानी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के सामने ही जननी एक्सप्रेस एम्बुलेंस पंचर हालत में खड़ी थी। समय रहते उसे ठीक नहीं कराया गया, जिससे आपात स्थिति में उसका उपयोग नहीं हो सका।

100 किमी दूर से आई एम्बुलेंस- इसके बाद पगारा से एम्बुलेंस भेजी गई, जो करीब 100 किलोमीटर दूर से 4 से 5 घंटे में गांव पहुंची। तब तक महिला की घर पर ही डिलीवरी हो चुकी थी। महिला के पति ने आरोप लगाया कि पगारा से आई एम्बुलेंस में ऑक्सीजन की व्यवस्था भी नहीं थी। बाद में चावलपानी स्वास्थ्य केंद्र से ऑक्सीजन सिलेंडर की व्यवस्था की गई और महिला को तामिया रेफर किया गया।

108 में ही होता रहा इलाज - जब महिला को चावलपानी स्वास्थ्य केंद्र लाया गया, तो उसे एम्बुलेंस से नीचे तक नहीं उतारा गया। जननी एक्सप्रेस में मौजूद नर्स ने करीब 2 घंटे तक 108 एम्बुलेंस में ही प्राथमिक उपचार दिया और डॉक्टर से फोन पर सलाह लेकर इलाज करती रहीं। हालत गंभीर होने पर महिला को तामिया रेफर किया गया, लेकिन रास्ते में ही उसने दम तोड़ दिया।

नरेश गुन्नाड़े, सीएमएचओ,छिंदवाड़ा ने कहा मामला मेरे संज्ञान में आया है और यह बेहद गंभीर है। एम्बुलेंस का पंचर होना और ऑक्सीजन की कमी जैसे बिंदुओं पर जानकारी ली जा रही है। यदि लापरवाही सिद्ध होती है, तो किसी को बख्शा नहीं जाएगा।

सीएमएचओ ने दिया कार्रवाई का आश्नासन- जिला मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी नरेश गुन्नाड़े ने कहा कि मामला संज्ञान में आया है, पूरी जानकारी ली जा रही है। यदि लापरवाही पाई गई, तो दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। यह पहला मामला नहीं है। बीते दो महीनों में तामिया-चावलपानी क्षेत्र में एम्बुलेंस सेवाओं को लेकर कई शिकायतें सामने आ चुकी हैं। हाल ही में एक अन्य गर्भवती महिला को 6 घंटे तक एम्बुलेंस नहीं मिल पाई थी, जिसके बाद समाजसेवियों के हस्तक्षेप से उसे अस्पताल पहुंचाया गया।

सतना में आदमखोर हुए आवारा कुत्ते

48 घंटे में 40 शिकार, अब 3 साल के मासूम को घर के बाहर ही दबोचा

सतना (नप्र)। एमपी के सतना जिले में आवारा कुत्तों का आतंक अब बेकाबू होता जा रहा है। बुधवार को एक साथ 40 लोगों को शिकार बनाने वाली घटना के बाद शुक्रवार सुबह राजेंद्र नगर इलाके से एक और डराने वाला सीसीटीवी फुटेज सामने आया है। यहां एक आवारा कुत्ते ने घर के बाहर खेल रहे 3 साल के मासूम बच्चे पर हमला कर उसे बुरी तरह जख्मी कर दिया।

जानकारी के अनुसार, घटना 21 अप्रैल की देर शाम की है। राजेंद्र नगर गली नंबर 9 निवासी जितेंद्र सिंह के घर में शादी समारोह का माहौल था। इस खुशी में शामिल होने के लिए रीवा से उनके रिश्तेदार धीरेंद्र सिंह सपरिवार आए हुए थे। उनका 3 वर्षीय बेटा रोहन घर के बाहर खेल रहा था, तभी एक आवारा कुत्ता वहां पहुंचा और अचानक मासूम पर झपट पड़ा।

चीख पुकार सुनकर दौड़े लोग- सीसीटीवी फुटेज में साफ दिख रहा है कि मासूम बच्चा कुछ समझ पाता, उससे पहले ही कुत्ते ने उसे दबोच लिया और उसके हाथ पर गहरा जख्म कर दिया। बच्चे की चीख सुनकर पास से गुजर रहे राहगीरों ने फुर्ती दिखाई और कुत्ते को खदेड़कर बच्चे को उसके चंगुल से छुड़ाया। लहूलुहान हालत में परिजन बच्चे को लेकर तुरंत निजी डॉक्टर और फिर जिला अस्पताल पहुंचे, जहाँ उसे एंटी-रेबीज वैक्सीन लगाई गई।

बढ़े रहे डॉग बाइट के मामले- शहर में पिछले 48 घंटों के भीतर हुई इन बैक-टू-बैक घटनाओं ने नगर निगम की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। स्थानीय नागरिकों का कहना है कि गलियों में आवारा कुत्तों का जमावड़ा लगा रहता है, जिससे रात के समय निकलना दूभर हो गया है। नगर निगम का डॉग स्क्वायड केवल कागजों पर चल रहा है। अगर समय रहते कार्रवाई नहीं हुई, तो किसी दिन बड़ी अनहोनी हो सकती है।

पीड़ित बच्चे के पिता ने कहा बच्चा घर के बाहर खेल रहा था, हमें अंदाज़ा भी नहीं था कि कुत्ता इस कदर हमला कर देगा। अगर लोग नहीं दौड़ते तो जान चली जाती। नगर निगम को शहरवासियों की जान की कोई फिक्र नहीं है। गौरतलब है कि अभी बुधवार शाम को ही गहरानाला क्षेत्र से लेकर रेलवे स्टेशन तक एक सफेद रंग के कुत्ते ने करीब 40 से 50 लोगों को काटकर अस्पताल पहुंचा दिया था।

पुस्तक समीक्षा

गौरव गौतम
समीक्षक

लालित्यं शरणं व्रज- सांस्कृतिक यात्रा पर ले जाती पुस्तक

लालित्यं शरणं व्रज' डॉक्टर गरिमा संजय दुबे के निबन्धों का संग्रह है जो उनकी कृति 'समर्पयामि' के बाद उनके लालित्य लेखनी का विस्तार है जिसमें निरंतरता भी है और नवोन्मेषता भी। इस निबन्ध का शीर्षक भगवद्गीता के अंतिम अध्याय के 66वें श्लोक का स्मरण कराता है जिसमें श्रीकृष्ण अर्जुन की शंका का समाधान करते हुए कहते है कि केवल मेरी शरण में आओ-मामेकं शरणं व्रज। श्रीकृष्ण से ज्यादा लालित्य किसमें होगा जिनमें सभी कलाएँ विद्यमान है या ऐसा कहे कि सभी कलाएँ उनसे ही उद्भासित होती है। ललित निबन्ध विधा भी श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व की तरह ही है जिसमें कल्पना और रागात्मकता है जिससे यह विधा विषय से जुड़ी रहकर भी स्वतंत्र होती है उससे बँधती नहीं है।

यह कृति बतियाते हुए एक सांस्कृतिक यात्रा पर ले जाती है जहाँ पाठक पर्व की रम्यता,दूब की पावनता, कुश की कठोरता, हरसिंगार का विनय, अपराजिता की नीलिमा, मंजरी की सुगंध, आम की महक, रोटी के स्वाद, उत्सव की समृद्धि, लोक की जड़ में निहित चैतन्यता, कुंभ की आस्था, रात की धुन,पावस की फुहार, शरद की चाँदनी,नदी के बहाव, त्रिवेणी की लहर,बंशी के स्वर, राधा का समर्पण और कन्हैया से उनकी एकात्मकता, शिव के वैराग और लास्य आदि से परिचित ही नहीं एकरस भी होता है। निबंधों के कथ्य दृष्टि को बांधने के साथ-साथ श्रवण और घ्राण से सम्बन्धित इंद्रियों को भी सक्रिय कर देते है। पाठक वर्तमान में खड़े होकर अतीत को निहारते हुए भावी जीवन के लिए राह पाता है वह अपने परिवेश को 'देखने' में सक्षम हो जाता है। यह कृति संस्कृति के बिखरे हुए कणों को समन्वित करने का एक प्रयास है जो बताती है कि धरोहर भूतपूर्व नहीं बल्कि अभूतपूर्व होती है। अपने प्रकृति और परिवेश के जिन उपदानों पर व्यक्ति द्वारा पहले नोटिस भी नहीं लिया जाता रहा है इस कृति से गुजरकर वह उनके लिए संवेदनशील होंगे। उन्हें परखने में सक्षम होंगे।

उलटपंथी विचारधारा और औपनिवेशिक प्रभाव से ग्रसित मानसिकता ने भारतीय संस्कृति को 'बनाम' के रूप में देखा है जिसके कारण शैव बनाम वैष्णव के अनुरूप साहित्य को परखा गया है जिसे पालने पोसने का कार्य शिक्षा व्यवस्था द्वारा किया गया। गरिमा जी ने इस कृति में बताया है कि शिव और विष्णु विरोधी नहीं 'युग्म' है जो सृष्टि का पालन और संरक्षण करते है। 'उत्तिष्ठ उत्तिष्ठ गोविंद' निबन्ध हरि-हर के आपसी सम्बन्ध को व्यक्त करने वाला है जिसका विस्तार 'दो यात्रा, दो बिंब, एक फल' निबन्ध में भी है जिसमें अमरनाथ और जगन्नाथ की यात्रा के बारे में बताया है जो आषाढ़ माह में शुरू होती है। 'उत्तिष्ठ उत्तिष्ठ गोविंद' का कथ्य यह भी बताता है कि जीवन में प्रगति और उत्थान के लिए निरंतर जाग्रत रहने और प्रबोधन की आवश्यकता है।

प्रत्येक देश की संस्कृति अन्य देश से संवादरत होती है किंतु उसकी विशिष्टता भी होती है जिसे गरिमा जी ने 'तितिक्षा रूपी तृण- दूर्वा और कुश' में बताया है। दूर्वा की यत्र-तत्र-सर्वत्र व्याप्ति के कारण अँग्रेजी में उसे डेविल्स ग्रास कहते है जबकि भारत में ऐसा कोई शुभ कार्य नहीं जिसमें दूर्वा का प्रयोग न होता हो। गणेश भगवान को तो यह विशेष प्रिय है। इस निबन्ध में तुलसीदास, विद्यानिवास मिश्र और कुबेरनाथ राय के माध्यम से दूर्वा की महत्ता को रेखांकित किया गया है। यह निबन्ध यह भी बताता है कि भारतीय संस्कृति के केंद्र में चराचर जगत है केवल मानव नहीं। मानव का प्रकृति से द्वैत नहीं;अद्वैत का सम्बन्ध है। मानव, प्रकृति का हिस्सा है उससे अलग नहीं है। इस कृति में लेखिका ने हरसिंगार, अपराजिता जैसे फूलों के माध्यम से भारतीय परिवेश और भारतीय ज्ञान मीमांसा को जानने और परखने का उपक्रम किया है कि प्रकृति की हर शय में स्मृतियों की अनेक परत छुपी हुई है जिन्हें संवेदना के स्पर्श से अनावृत किया जा सकता है।

इस कृति का कुंभ यात्रा से सम्बन्धित 'आस्था,अनुभूति, अनुभव की त्रिवेणी- महाकुंभ' निबन्ध इस तरह से लिखा गया है कि इसका शब्द-शब्द भीतर समा जा जाने वाला है। पिछले शब्द की कुक्षी से निकला अगला शब्द जब वाक्य बनकर अपना अर्थ संप्रेषित करता है तब ऐसा लगता है कि त्रिवेणी के पावन तट पर खड़े होकर हम निहार रहे है।

पर्यटक और तीर्थाटन में जो भावगत अंतर होता है लेखिका ने उसे भी प्रस्तुत किया है जो आज के समय को आईना दिखाना है जो कि साहित्य का मूलभूत कार्य है कि यह समय और समाज को विवश करें कि वह अपनी संवेदना को टटोले। तीर्थ को लेकर जो 'लोक' में भाव है उसे गरिमा जी ने प्रस्तुत किया है जिसे सभ्यता की कालिमा लीलने को आतुर है। इसे निम्न उद्धरण में समझा जा सकता है-

÷हम और आप तो तीर्थ में भी विश्राम और सुविधा ढूँढ़ते हैं, यह लोकधारा कुछ नहीं चाहती। बस अपनी माँ की गोद का स्पर्श चाहती है, उन्हें आपसे न कोई सुविधा चाहिए, न वे किसी कष्ट का वर्णन करते हैं। उनके अनुसार यात्रा में उठाया गया कष्ट भी तप है, केवल तीर्थ में पहुँच कर स्नान-दर्शन करना ही तीर्थ नहीं होता। पूरी यात्रा ही तीर्थ होती है, यह मानकर मीलों पैदल चलकर यात्रा करने का इतिहास रहा है, तभी तो दुधमुँह बच्चों को गोद में लेकर मांएँ पहुँच जाती हैं संगम, अशक्त बुजुर्गों को लेकर चलते हैं बेटा-बहू। धन्य है इनकी आस्था, धन्य है इनका भाव। सच पूछिए तो मुझे तो इन लोगों का दर्शन ही तीर्थ का फल मालूम हुआ।

उपर्युक्त कथ्य एक दीप ज्योति की तरह है जो मानस की मलीनता को हटाने के लिए प्रेरित करता है कि हम लोक के वास्तविक रूप को समझ सके न कि अपनी पिछड़ी हुई नज़र से उसका अवलोकन करें। इस निबन्ध में कुंभ के बारह वर्ष के संदर्भ के में यह कथन कि प्रत्येक बारह वर्ष में नवीनीकरण का प्रयास भी, जागृत करने का प्रयास भी। परंपरा के प्रवाह को समझने में मददगार है। ऐसे ही गंगा के प्रवाह के संदर्भ में गरिमा जी की यह टिप्पणी बड़ी सारगर्भित और सार्थक है कि यह तो नित्य नूतन और चिर पुरातन प्रवाह है। संशय भरा मन कहता है किंतु इसका अर्थ यह तो नहीं कि हम उसकी पवित्रता का दुरुपयोग करें, उसे मलिन करते रहें। गंगा का होना भारत का होना है, वह भारत की सुषुम्ना नाड़ी है जिसमें प्राण प्रवाहित होते हैं।

व्यक्ति-व्यंजक शैली में लिखे गए निबन्ध की भाषा प्रवाह युक्त है। विश्लेषण के बीच में सूत्र वाक्य का आना पढ़ने वाले को रोकता है और मनन करने को मजबूर करता है। एक ठहराव, आगे के पाठ को पढ़ने की गति देता है। भाषा की तरलता और छोटे वाक्य विचार को सहज और बोधगम्य बनाते है जो पाठक के मानस को संस्कारवान बनाने में सहायी है।

पुस्तक- लालित्यं शरणं व्रज
लेखक-डॉ. गरिमा संजय दुबे
प्रकाशक- शिवना प्रकाशन प्रकाशन

राजकुमार कुम्भज की कविता?

भीतर सारा, समुद्र खारा

शून्य से प्रारंभ शून्य में ही पूर्ण
वह जो भी मिलता है तिनका-तिनका प्रेम में
ले जाता है अधिकतम से कम-कम की ओर
जिसका नहीं कोई ओर,नहीं कोई छोर
खोया तो पाया,पाया तो खोया फिर-फिर
था फेर था,उलझनें थीं,चक्र था,समझने में
जबकि न आगे,न पीछे,न उत्तर,न दक्षिण
समझने जैसा ज़रा कुछ भी था ही नहीं

एक प्याला विष था,वह था,मैं था दिगंत में
एक आग थी,एक जँगल था धधकता हुआ
एक तबियत थी,एक हवा,एक दृढ़ता
और एक धुन थी कि सारँगी की पीर जैसी
गूँजती ही रहती थी इस तरफ़,उस तरफ़
कोई नाव नहीं,कोई तट नहीं,कोई छाँव नहीं
सिर्फ़ एक ऊफनती नदी में अनगिनत लहरें
बाहर-बाहर चाक-चौबंद अमृत-कलश
भीतर सारा,समुद्र खारा.

सच अब भी है संभावना

एक बेहूदा तमाशा है ज़िंदगी
झूठ बोलता हूँ तो बढ़ता जाता है भरोसा
सच बोलता हूँ तो घटती जाती हैं मित्रता?
झूठे बन गये,बनते गये चक्रवर्ती सम्राट
सच यही है कि सच अब भी है संभावना
कुछ सोचता हूँ कि कुछ सोचकर बोलूँ मैं
सोचकर बोलता हूँ तो गिरफ़्त है सरकार की
सच है कि हर सच है सरकार की गिरफ़्त में
तू क्या,मैं क्या,ये क्या,वो क्या?

सीक्रेट एजेंट

प्रज्ञा मिश्रा

दहशत के बीच कुछ मुस्कान भी ...!

टी वी सीरीज 'नार्कोस' में वाग्नर मौरा दिखाई दिए थे। पिछले बरस फिल्म 'सीक्रेट एजेंट' के अवार्ड्स और ऑस्कर नॉमिनेशन ने उन्हें सितारा बना दिया। जब कान फिल्म फेस्टिवल में बेस्ट एक्टर का अवार्ड मिला तो शूटिंग कर रहे थे। वहीं से शुक्रिया अदा किया। फिर यह नाम हर उस कोने में गूंजा, जहां बेहतरीन फिल्मों की बात होती है। इस महीने 'टाइम' मैगजीन ने उन्हें फिल्म 'सीक्रेट एजेंट' के लिए 'कवर' पन्ना दिया है।

ब्राजील की यह फिल्म 1970 के दशक में फौज की तानाशाही पर है। तानाशाही का विरोध करने वाली फिल्में शायद ही कभी हंसी-मजाक का मौका देती हैं और किसी इंसान के कटे पैर को मजाक में बदलना तो और भी मुश्किल है। ब्राजील के फिल्मकार क्लेबर मेंडोंका फ़िल्हो ने आज़ाद-ख्याल नज़रिया अपनाया है और दहशत के बीच भी हंसी-खुशी के पल ढूंढ निकाले हैं। ब्राजील की सैनिक तानाशाही (1977) में शुरू होने वाली यह फिल्म राजनीति से दूर, धूप और जमीन पर है, जहां इंसान जीते हैं। कुछ नंगे पांव कार्निवल मनाते हैं, धूल में खुशी से नाचते हैं, कुछ हिंसा का शिकार हो जाते हैं।

मार्सेलो के आसपास हताशा है, उदास किरदार, जिसे वाग्नर मौरा ने खूबसूरती से निभाया है। यूनिवर्सिटी का पूर्व प्रोफेसर अटलांटिक तट पर बसे पनाह की तलाश में

है। वहां नया घर बसाता है और धीरे-धीरे उसकी अतीत की जिंदगी भी साफ होती जाती है। पत्नी फातिमा की मौत हो चुकी थी, बच्चा फनाँडो नाना-नानी के साथ रहता है। 'द सीक्रेट एजेंट' समाज का डर दिखाती है।

हर किरदार अनोखा है और उसे पूरी गरिमा के साथ इंसानियत दी है, चाहे वह हिटमैन हो या मासलीयत दिवंगत पत्नी हो, दिल को चीर देने वाले सीन हैं।

'द सीक्रेट एजेंट' को मार्सेलो का बच्चा देखना चाहता है, भले ही उसका पोस्टर देख बुरे सपने आते हों। मेंडोंका की यह फिल्म भी स्पीलबर्ग की तरह है। बढ़ते डर के साथ सोचते हैं कि मार्सेलो कभी पकड़ा जाएगा और अगर हां, तो कब ? यहां खतरा 'राजनीतिक शार्क' से है, मतलब फौजी तानाशाही से, जहां अमीर और ताकतवर समझते हैं कि जो भी उन्हें जरा सा भी नाराज करे, उसे कुचल डालें। पीछे पड़े लोगों से बचते मार्सेलो ऐसी सड़क पर पहुंच जाता है, जहां पूरे जोश से जश्न मना रहे हैं। वह ड्रिंक लेता है और नाचने लगता है। तब एहसास होता है कि अगर सत्ता में बैठे लोग उसे मारने की कोशिश न कर रहे होते तो उसकी दुनिया कितनी खुशहाल हो सकती थी। 'मूबी' पर ये फिल्म ज़रूर देखें।

कविता

अब कहां वो गांव है

विजय जोशी
पूर्व ग्रुप महाप्रबंधक, भेल

छोड़ आया था जिसे एक सुंदर मोड़ पर
स्वप्न बनकर सो गया अब कहां वो गांव है?

छांह में जिसके तले बैठते थे सब भले
उस रक्तवर्णी गुलमुहर की अब
बची कब छांव है
अब कहां?

रही अमराई नहीं पुरवा तक बही नहीं
मोर भी हैरान हैं गुम गया जो ठांव है
अब कहां?

मौसम भी रुठा है अपनों से टूटा है
नदियां हैरान हैं अब कहां वो नाव है
अब कहां?

शहरों की चाल है अब कहां चौपाल है
संगी सब बिछड़ गए अब कहां वो चाव है
अब कहां?

सज गईं हैं मंडियां खो गईं पगडंडियां
दौड़ मिल जाएं गले अब कहां वो पांव हैं
अब कहां?

सूनापन उतरा है जीवन भी बिखरा है
खो गया सब कुछ यहां अब कहां वो भाव है
अब कहां?

लघुकथा: अंत भला, तो सब भला

रामेश्वरम तिवारी

जगतपति क्षीरसागर में शेषनाग की शय्या पर आँखें बंद किए, दोनों पैरों को फैलाए, आराम से लेटे हुए हैं। वहीं पर सागर के स्वामी वरुणदेव की पुत्री और देवी लक्ष्मी उनके चरणों को चाँप रही हैं। तभी देवर्षि नारद ने हड़बड़ाते हुए, दरवाजे पर बिना दस्तक दिए , जगतपति के शयन-कक्ष में प्रवेश किया और देवी लक्ष्मी को संबोधित करते हुए- 'देवी भूलोक में नारी शक्ति पर बहुत बड़ी विपदा आन पड़ी है और जगतपति हैं कि निश्चिंत होकर सोए हुए हैं। मेरा आपसे अनुरोध है कि आप इन्हें अभी और इसी वक्त उठाइए, वरना देर होने पर बड़ा अनर्थ हो जाएगा।'

देवी लक्ष्मी ने देवर्षि नारद को बैठक में जाकर प्रतीक्षा करने को कहा और जगतिपति के कान में जाने क्या मंत्र फूँका कि वे एक झटके में उठ खड़े हुए और बोले- 'देवी आपने मुझे गहन निद्रा से क्यों और किसलिए जगाया है।' देवी ने मुस्कुराते हुए अपनी मृदुल वाणी में कहा- 'स्वामी, आपके जो विश्व भ्रमणाचारी संवाददाता हैं वो कोई महत्वपूर्ण संदेश देने के लिए आए हैं। अब कृपाकर जल्दी से उठिए अपने हाथ, पैर, मुँह को धोइए और देवर्षि से मिल लीजिए। देवर्षि भी गजब करते हैं न दिन देखते हैं, न रात। बिना पूर्व सूचना के जब मर्जी हुई, मुँह उठाया और नारायण ! नारायण ! का जाप करते हुए चले आते हैं।'

देवी लक्ष्मी की बातों को जगतपति लगभग अनसुना करते हुए सीधे स्नानागार में पहुँचे और चंद लम्हों में तरो-ताज़ा होकर बैठक में पहुँच गए। देवर्षि ने उठकर, करबद्ध प्रणाम किया और बिना किसी औपचारिकता के खड़े-खड़े ही शुरू हो गए। 'प्रभु ! वो बात ऐसी है कि भूलोक पर आर्यावृत का न्यायप्रिय सम्राट नारी शक्ति को सत्ता में भागीदारी के लिए तैंतीस प्रतिशत आरक्षण का विधेयक पास करवाना चाहता था, पर विपक्षी दलों के विरोध के कारण विधेयक पास नहीं हो सका। परिणामतः एक बार फिर से नारी शक्ति अपने अधिकार से वंचित रह गई।'

देवर्षि की चिंता को सुनकर जगतपति थोड़ी देर के लिए गंभीर हुए, छत की ओर उन्मुख होकर, कुछ देर के लिए सोचते रहे और फिर नितांत शाँत स्वर में बोले- 'देखो देवर्षि 'नारी शक्ति वंदना' विधेयक को लेकर तुम्हारी चिंता वाजिब है, पर इस मामले में, मैं तुम्हारी किसी प्रकार की मदद नहीं कर सकता। चूँकि इसमें देवों का हित जुड़ा हुआ है। उन्होंने ही यह सारा प्रपंच रचा है। जिस तरह से त्रेतायुग में सरस्वती के ज़रिए राजा दशरथ की रानी कैकेयी की बुद्धि को भ्रष्ट कर दिया था, ठीक उसी तर्ज़ पर देवी सरस्वती ने समस्त विपक्षी दलों के सदस्यों की बुद्धि का स्तभंन कर दिया यानी 'विनाश काले विपरीत बुद्धि।' अतः मेरा कहना मानिए और मेरी तरह आप भी कुछ दिनों के लिए निश्चिंत होकर, खूँटी तानकर सो जाइए। वो कहावत है न कि अंत भला, तो सब भलाज!'

व्यंग्य

सिंधु कन्हौआ
लेखक व्यंग्यकार हैं।

बता ये हुनर तूने सीखा कहाँ से?

आमतौर पर पतंगें उड़ने उड़ाने के हर मौसम में जहाँ आसमान रंगबिरंगी पतंगों से अटा रहता है तो वहीं धरा दो तरह के पतंगबाजों से सुसज्जित रहती है । एक वर्ग वह जो, अपने हुनर को सजगता और चाव से साधकर अपने फुर्तीले अंदाज में दूसरी पतंगों से पेंच लड़ाकर काटता है,दूसरे वर्ग के इनसे कहीं अधिक पारंगत हुनरबाजों का खेमा जो पतंगबाजी की इस प्रतिभा प्रदर्शन के तमाम झमेले से दूर पतंग कटने के इंतजार में आरामतलबी के साथ अपनी अपनी छतों छज्जे पर अलसाया सुस्ताया आँखें बिछाए बैठे होता है, पर ज्योंही पतंग कटती है ये दूसरे खेमे के चतुर सुजान शूरवीर बला की फुर्ती के साथ, उस कटी पतंग पर हक जताने की खातिर धक्का मुक्की करते,हाँफते गिरते पड़ते दौड़ लगा देते हैं बस कुछ ऐसी ही फुर्ती श्रेयभक्षी भी दिखाते हैं जब जब कोई चुनौतीपूर्ण काम,जिम्मेदारी या मिशन पूरा होता है इनकी फौज भी इसी फुर्ती के साथ सारा क्रेडिट गप्प करने की खातिर, जी जान छोड़कर दौड़ लगा देती है।

क्रेडिटखोरी एक लाजवाब हुनर है, क्रेडिटखोर बंदों की प्रतिभा को हम रोजमर्रा के एक आम उदाहरण से समझते हैं। आमतौर पर पतंगें उड़ने उड़ाने के हर मौसम में जहाँ आसमान रंगबिरंगी पतंगों से अटा रहता है तो वहीं धरा दो तरह के पतंगबाजों से सुसज्जित रहती है । एक वर्ग वह जो, अपने हुनर को सजगता और चाव से साधकर अपने फुर्तीले अंदाज में दूसरी पतंगों से पेंच लड़ाकर काटता है,दूसरे वर्ग के इनसे कहीं अधिक पारंगत हुनरबाजों का खेमा जो पतंगबाजी की इस प्रतिभा प्रदर्शन के तमाम झमेले से दूर पतंग कटने के इंतजार में आरामतलबी के साथ अपनी अपनी छतों छज्जे पर अलसाया सुस्ताया आँखें बिछाए बैठे होता है, पर ज्योंही पतंग कटती है ये दूसरे खेमे के चतुर सुजान शूरवीर बला की फुर्ती के साथ, उस कटी पतंग पर हक जताने की खातिर धक्का मुक्की करते,हाँफते गिरते पड़ते दौड़ लगा देते हैं बस कुछ ऐसी ही फुर्ती श्रेयभक्षी भी दिखाते हैं जब जब कोई चुनौतीपूर्ण काम,जिम्मेदारी या मिशन पूरा होता है इनकी फौज भी इसी फुर्ती के साथ सारा क्रेडिट गप्प करने की खातिर, जी जान छोड़कर दौड़ लगा देती है। पतंग उड़ाने का अपना कौशल है तो पतंग लूटना भी कोई कम टेलेंट का काम नहीं,बस इसी तरह पूरे समर्पण,निष्ठा और परिश्रम के साथ किसी काम को अंजाम देने में जो पुरूषार्थ लगता है,फटाक से झपट्टा मारकर उसका क्रेडिट बटोरने में भी कोई कम प्रतिभा नहीं लगती है।

एक नामी गिरामी हस्ती के मूल कथन को यदि थोड़ा बट देकर ,थोड़ा उमेठकर व्यंग्य का मुलम्मा चढ़ाने की कोशिश की जाए तो लब्बोलुआब यह कि इस फानी दुनिया में दो किस्म के प्राणियों का समूह रहता है ,एक भरपूर शिद्दत और समर्पण के साथ किसी जिम्मेदारी को अंजाम देने वाला भरोसेमंद समूह और दूसरा, सारा क्रेडिट गटकने में सिद्धहस्त हुनरबाजों का खेमा । जहाँ पहले समूह में भलेमानसों का टोटा ही बना रहता है वहीं दूसरे समूह में बेहिसाब रेलमपेल,धक्कामुक्की और काँव काँव और आत्ममुग्धता के खासे सिलसिले हैं।हालांकि वह नामचीन हस्ती लंबी रेस का घोड़ा साबित होने के मकसद से पहले ही समूह में बने रहने की सलाह देती है मगर इतना धीरज,सेवाभाव ,सहनशक्ति और कर्तव्यपरायणता का जज्बा भला कितनों के पास है? इसलिए कर्तव्यपालन के समय अकर्मण्यता और खुदगर्जी का तंबू ठोक लंबी तानकर आराम फरमाने वाले तमाम अलसाए सुस्ताए मौकापरस्त(श्रेयभक्षी) जीवधारी वाहवाही की पतंग लूटने कूद फाँदकर सामने आ जाते हैं। शायद इन्हीं क्रेडिटखोरों से प्रताड़ित होकर एक नामचीन शायर ने अपनी व्यथा को शब्द देते हुए कहा है

मैं पर्वतों से लड़ता रहा और चंद लोग
गीली जमीन खोदकर फरहाद हो गए।

दत्तात्रेय जी ने कुदरत से चुने गए अपने चौबीस गुरूजनों का उल्लेख किया है तो इन श्रेयभक्षी समूह ने भी पशुपक्षी प्रजाति से अपने लिए कुछ रोलमॉडल खोज निकाले हैं जो यथासमय इन दिग्गजों के सामने अपना आदर्श स्वरूप प्रस्तुत कर इनके खुद बखुद ओढ़े गए महानता के सेहरे में चार चांद टांकते रहते हैं।इन गुरूजनों में शीर्ष् स्थान पर है ,मुर्गे की जमात जिसकी यह गलतफहमी सदियों से बरकरार है कि सूरज दादा की गुडमार्निंग उसी की कुकडू कूं से होती है।तमाम पौराणिक मान्यताओं ,धार्मिक आस्था और वैज्ञानिक आधारों को धता बताकर यह जमात,सालों साल से भोर होने का सारा क्रेडिट खुद बटोरती आ रही है।इनकी अगली गुरू है टिटहरी रानी जो इस भ्रम में जीती आई है कि उसके शीर्षासन लगाते ही तूफान थम जाता है ,इसी मुगालते का शिकार होकर वह ताजिंदगी अकड़ती फिरती है।इनकी तीसरी गुरू होती है छतों,छप्परों से लटकी छिपकली जो इस गुमान में जीती है कि सारी बिल्डिंग का बोझ हम उठाते हैं ....।

ये क्रेडिटखोर बातों की बाजीगरी और ड्रामेबाजी में भी बखूबी पारंगत होते हैं।हर श्रेष्ठ परिणाम,सुखद समाधान और शुभ लाभ की मोटी मलाई पर धम्म धम्म कूदकर श्रेय की डुगडुगी बजाने लगते हैं और अपने इस त्वरित झपट्टामार पराक्रम से भोलेभाले असली हकदारों को पटखनी देकर नीचे की पनीली छाछ में बिलबिलाने को मजबूर कर देते हैं।सामूहिक चुनौतियों के शानदार समापन के वक्त ,इन श्रेयभक्षियों का, कुल जमा क्रेडिट अकेले ही गप कर जाने का, अद्भुत हुनर भरभराकर बाहर निकलता है।ऐसे मौकों पर इनका पराक्रम देखने लायक होता है कि काम को अंजाम देते वक्त कतार में सबसे पीछे चल रहे ये शूरवीर बला की फुर्ती से झपट्टा मारकर किसी फिल्?मी कोरस के केंद्र में ठुमका लगाते हीरो की भूमिका में आ जाते हैं।

इस खेमे के कुछ चुनिंदा जुमले होते हैं मसलन खैर मनाओ अमुक संस्था,इकाई या खानदान में खुदा ने हमें भेजा वरना परखच्चे उड़ जाते या तुम सबका जयकारा सिर्फ मेरी वजह से है या बाकी सब कमियाँ सिर्फ मेरी महानता के आवरण में छुपी रहती हैं।इनके इस जुबानी जमाखर्च का कुल जमा जोड़ यह कि यदि इस धरा पर ,इन महान विभूतियों का अवतरण न हुआ होता तो हाहाकार मच जाता, कयामत ही आ जाती ... पर सच तो यह कि ऐसे मुगालते पाल पाल कर जाने कितने रणबांकुरे इस फानी दुनिया से कूच कर गए और एक तिनका भी टस से मस नहीं हुआ, आप ही बताइए हुआ क्या ?

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला- जन्मदिन विशेष

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

भारतीय चित्रकला में रवि वर्मा का स्थान

रवि कभी आँगन में कहीं भी बैठकर फूल-पत्तियों का स्केच बनाता तो कभी रौशनी में नहाए वातावरण में भीजता वहाँ के दृश्य को अपने पटल पर उतारने में लगा रहता था। लोगों का पहनावा भी वहाँ के अनुरूप ही था जो धीरे-धीरे रवि वर्मा के चित्रों में आने लगा था। बालक रवि वर्मा शुरू से ही प्रतिभाशाली था। उस रोज भी वो अपने चाचा के साथ लगा हुआ था कि चाचा को अचानक कुछ विशेष कारण से थोड़ी देर के लिए बाहर जाना पड़ा। एकांत पाकर अंतस के प्रबल भावों के बल पर बालक रवि वर्मा जो मात्र 14 वर्ष का था बेखौफ, निडर हो चित्र में रंग भरना शुरू कर दिया साथ ही बचे हुए रेखा कार्यों को भी पूरा कर दिया जो एक आश्चर्य जनक बात थी। वापस आने पर चित्र देखते ही राजा वर्मा आश्चर्य से भाव विभोर हो उठे। उनके मन में बालक रवि वर्मा को लेकर उम्मीदों का एक पहाड़ उभर आया और मन ही मन वो रवि वर्मा को भविष्य का महान चित्रकार मान बैठे जो आगे चलकर शत-प्रतिशत खरा भी सिद्ध हुआ, जिसके लिए उनके चाचा हमेशा ही रवि वर्मा के साथ खड़े रहे। उनके प्रयासों के बल पर ही इनको त्रावनकोर के महाराजा से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ प्रतिफल ये हुआ कि दरबारी चित्रकार रामास्वामी द्वारा इन्हें जलरंग की बारीकियाँ समझने का मौका मिला जल्द ही ये जलरंग में दक्षता हासिल करने में भी सफल रहे।

कला के प्रति रवि वर्मा की ललक और तीव्र पकड़ को देखकर रामास्वामी तथा ब्रिटिश शबीह चित्रकार थियोडोर जॉनसन दोनों ने रवि वर्मा को तैल रंग में प्रशिक्षण देनें से साफ मना कर दिया। हाँ जॉनसन की तरफ से बस इतनी अनुमति थी कि पूर्ण हुए चित्र को बालक निहार सकता है बस। उसका कथन था कि चित्र निर्माण प्रक्रिया के समय वो अपने आस-पास किसी को भी नहीं रहने देता, ध्यान भंग की खाल ओढ़कर वो खुद को इस प्रक्रिया से अलग कर लिया था बावजूद इसके अधिकतर लोगों का मानना था कि रवि वर्मा को तैल रंग की शिक्षा थियोडोर जॉनसन से ही मिली। मामला संशयग्रस्त है।

जॉनसन ने खुद को बचाने का यह कदम ईर्ष्या बस उठाया या रवि वर्मा के आगे भविष्य में उसे अपनी जमीन खिसकती नजर आई, कह पाना मुश्किल है पर एक बात तो साफ है कि मुश्किल हालात के बाद ही खुशनुमा प्रभात का आनंद है अतः मुश्किल घड़ी में भी हाथ पैर मारना बंद नहीं करना चाहिए युवा रवि वर्मा ने भी यही किया और मालाबार स्कूल ऑफ पेंटिंग में भी दाखिला के प्रयास में जा लगे यहाँ भी निराशा ही हाथ लगी। अब तक अपने अथक प्रयासों और लगातार निराश होने के चलते मानसिक रूप से कमजोर महसूस करने लगे थे रवि वर्मा पर चित्रकला में नवीन सृजन में निरंतरता बनी रही इस बीच भी इनके चित्र लगातार बनते रहे और अथक प्रयास, एकाग्रचित मन के प्रयासों का फल तथा महाराजा के सहयोग से पाश्चात्य कला चित्रों पर प्राप्त कुछ चित्रकला संबंधित पुस्तकों के चित्रों को देखकर, गहन अध्ययन कर ये चित्रों की बारीकियों को पकड़ पाये और प्रयत्न के बल पर ही खुद एक संस्थान बन बैठे फलतः पाश्चात्य के ही कला के अधिकतर विद्वानों को कहना पड़ा कि लाजवाब गुणों के धनी हैं रवि वर्मा। देखते ही देखते इनके चित्र अंतर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनियों में भी सराहे जाने लगे और स्वर्ण पदक जैसे पुरस्कार हासिल करने में सफल रहे। राजा रवि वर्मा द्वारा स्थानीय शैलियों का भी खूब अध्ययन किया गया। परिचित चेहरों, उनके आसपास रहने वाले लोगों को पटल पर स्थापित कर उनमें दिव्यता भर कर वही रूप देवी देवताओं के हेतु प्रयोग किया गया?। उनके अधिकतर चित्रों में सुगंधा थी जिसको लेकर रवि वर्मा के बारे में तरह-तरह की बातें हवा हुई थी और जिसकी वजह से वर्मा जी को कई जगह घेरा भी गया था। चित्र सीता हरण में उन्होंने सीता के रुप में अपने ही पोती की छवि को अंकित किया था।

कलाकार राजा रवि वर्मा की माँ जो स्वयं कथकली-

कवयित्री व चित्रकार थीं, मणिप्रवालम्, पार्वती स्वयंवरम् जैसी विख्यात कृति थी जिनकी तथा पिता संस्कृत भाषा एवं आयुर्वेद के विद्वान, का असर था कि अब तक रवि वर्मा के काम का सिलसिला जोर पकड़ चुका था पर भटकन भी कम न थी विषय को लेकर ऊहापोह जैसा वातावरण विद्यमान था। उनका मॉडल उनके आसपास से ही होता था। वह एक ऐसे कलाकार थे जो कैनवास पर ऑयल कलर में काम करने वाले पहले भारतीय कलाकार बनें।

भारतीय कला जगत में, तैल रंगीय यथार्थता को लाने का श्रेय भी इन्हीं को जाता है। युरोपीय यथार्थवादी शैली को भारतीय रुप में प्रस्तुत कर देना धीरे-धीरे इनके लिए आसान होता गया। इनके चित्रों में शबीह चित्र, सामाजिक संदर्भों से युक्त चित्र और जग जाहिर धार्मिक चित्र प्रमुख थे। राष्ट्रीयता संबन्धी इनके चित्र भी कम नहीं थे जिनसे अंग्रेज भी खार खाये हुए थे। बाल गंगाधर तिलक, रानी लक्ष्मीबाई, महाराणा प्रताप और शिवाजी जैसे जननायकों के चित्र बनाकर वर्मा जी लोगों मे देशप्रेम की भावना को भी उजागर करने में सफल हुए और आंदोलनकारी लोगों के बीच भी सम्मानीय बन गये थे साथ ही महंगे कलाकार भी। कहा जाता है कि अपने पोट्रेट बनवाने के लिए लोगों को इनके हाँ करने का महीनों इंतजार करना पड़ता था। रेखांकन और अपने चित्रों को महान बनाने के लिए, चित्रों में जीवंतता लाने के लिए, चित्रों में सजीवता लाने के लिए इन्होंने अनेक शास्त्रीय ग्रंथों का अध्ययन किया। वेद-पुराण, उपनिषद, चित्रसूत्र, नाटक, साहित्य आदि के अध्ययन से भविष्य में बनने वाली कृतियों की रूपरेखा तय हो सकी तथा अपने छोटे भाई के साथ विभिन्न स्थानों पर जाकर रहन-सहन, वेष-भूसा का भी उन्होंने बड़े ही बारीकी के साथ अध्ययन किया। सांस्कृतिक परंपरा, वस्त्रों के पहनावे के नये-नये ढंग, चेहरों के बनावट, भाव, आभूषण और अलग-अलग स्थानों के पृष्ठभूमियों, पौराणिक विषयों पर गहनता के साथ काम किया गया। मेहराब, झाँकियां, महलों के रंग, अलंकरण, आदि को अलग-अलग स्थानों पर देख-समझ लेने के बाद उसमें राष्ट्रीयता के भाव को समावेशित करने के बाद कृतियों में उतारे हैं। समाज पर नाटक मंडलियों के प्रभाव का भी गहन अध्ययन करने के बाद इन्होंने अपने चित्रों का रूप, का रंग, अपने चित्रों के पीछे का बैकग्राउंड, अपने चित्रों के भाव-भंगिमा, लय-छंद ये सारे गुण ये अपने अध्ययन से ही सम्भव कर पाए और यही सारा अध्ययन जो इनका अपना था, इनकी अपनी विशेषता बन कर उभरी जिसके फलस्वरूप इनके मस्तिष्क पर कैरेक्टर को लेकर शास्त्रीयता परक भावनाएं पनप सकीं। कहा जाता है कि यात्रा के बाद इनके चित्रों में बैग्राउण्ड के भी दर्शन होने लगे थे हालांकि बैग्राउण्ड बनाने का कार्य इनके भाई का होता था। पूरा परिवार ही कलाकार था ऐसा लगता है।

संस्कार और संस्कृतियों के विशाल पटल पर चमकता भारत जहाँ? भरतमुनि, पतंजलि, आर्यभट्ट जैसे लोगों का जन्म हुआ हो, अजंता, एलोरा, खजुराहो, कोणार्क जैसी थाती से भरी पुरी धरा भारत को, लगभग 1000 पृष्ठों के बैश्विक कला पर लिखी जा रही पुस्तक में केवल एक आध पन्ने पर समेट देना क्या भारत के कला के साथ न्याय कहलाएगा? लेकिन यहाँ ऐसा हुआ एक कला समीक्षक द्वारा वैश्विक कला पर पुस्तक लिखते हुए भारतीय कला को महज कुछ शब्दों में समेट दिया गया मतलब कि जहाँ ईर्ष्या हो या जो समझ में ही न आये उस पर बात करने से अच्छा या उस पर और अधिक मेहनत करने से अच्छा उस पर बात ही न करी जाय वाली पद्धति पर किताब द आउट लाइन ऑफ आर्ट तैयार हुई जहाँ भारतीय कला के साथ अन्याय साफ तौर से दिखता है ऐसे समय में कलाकार राजा रवि वर्मा जी के चित्रों पर अच्छे समीक्षा की उम्मीद बेइमानी सी प्रतीत होती है। आम भारतीयों के निगाहों में अपने कला के जरिए रच-बस जाने वाले राजा रवि वर्मा गाहे-बगाहे समीक्षकों के भी अच्छे बुरे दौर से गुजरे हैं।

विचार

प्रतिभा मिश्रा

सेवानिवृत्त प्राचार्य जवाहर विद्यालय

खुशियों का स्कूल

सुखोमिंलिंस्की का मानना था कि बच्चों के लिए खुशियों का स्कूल दीवारों के भीतर नहीं बल्कि प्रकृति की गोद में शुरू होता है। उन्होंने नीले आसमान के नीचे पेड़ों की छांव में बच्चों को पढ़ाना शुरू किया। उनका मानना था कि, जब बच्चा प्रकृति के सौंदर्य को देखता है तो उसके भीतर संवेदनशीलता जागती है,जो उसे एक बेहतर इंसान बनाती है। इस पुस्तक का मूल मंत्र है मैं अपना हृदय बच्चों को देता हूं।सुखलोमिंलिस्कीं ने सिखाया ,कि एक शिक्षक को सबसे पहले एक बच्चा बनना पड़ता है। उन्होंने बच्चों के डर ,उनकी झिझक और जिज्ञासाओं को सम्मान दिया। खुशियों का स्कूल वह जगह है जहां बच्चे को गलतियां करने पर दंड नहीं मिलता, बल्कि उसे अपनी गलतियों से सीखने का अवसर दिया जाता है।

शिक्षा का अर्थ केवल साक्षरता या किताबी ज्ञान नहीं है, बल्कि एक कोमल मन को भविष्य के लिए तैयार करना है।

रुसी शिक्षाविद सुखोमिंलिंस्की की पुस्तक खुशियों का स्कूल आज के दौर में भी प्रासंगिक हो गयी है,जब शिक्षा केवल एक प्रतियोगिता बन कर रह गयी है।यह पुस्तक हमें याद दिलाती है कि बच्चे का दिल और उसकी संवेदनाएं,उसकी बुद्धि से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं।

सुखोमिंलिंस्की का मानना था कि बच्चों के लिए खुशियों का स्कूल दीवारों के भीतर नहीं बल्कि प्रकृति की गोद में शुरू होता है। उन्होंने नीले आसमान के नीचे पेड़ों की छांव में बच्चों को पढ़ाना शुरू किया।उनका मानना था कि, जब बच्चा प्रकृति के सौंदर्य को देखता है तो उसके भीतर संवेदनशीलता जागती है,जो उसे एक बेहतर इंसान बनाती है।

इस पुस्तक का मूल मंत्र है मैं अपना हृदय बच्चों को देता हूं।सुखलोमिंलिस्कीं ने सिखाया ,कि एक शिक्षक को सबसे पहले एक बच्चा बनना पड़ता है। उन्होंने बच्चों के डर ,उनकी झिझक और जिज्ञासाओं को सम्मान दिया। खुशियों का स्कूल वह जगह है जहां बच्चे को गलतियां करने पर दंड नहीं मिलता, बल्कि उसे अपनी गलतियों से सीखने का अवसर दिया जाता है।

जब हम इमोशनल इंटेलिजेंसी की बात करते हैं,तो सुखोलोमिंलिस्की दशकों पहले इसके बारे में लिख चुके थे। उन्होंने जोर दिया कि यदि बच्चे के मन में दया, करुणा और सहानुभूति के भाव नहीं हैं,तो उसकी बौध्दिक क्षमता समाज के लिए घातक हो सकती है। खुशियों के स्कूल में कहानियों, संगीत और कला के माध्यम से बच्चों की आत्मा को सींचा जाता है।

उन्होंने पारंपरिक अंकों की प्रणाली का विरोध किया।उनका मानना था कि ग्रेड्स या अंक बच्चों के बीच ईर्ष्या या हीन भावना पैदा करते हैं।उनके अनुसार मूल्यांकन ऐसा होना चाहिए जो बच्चों के आत्मविश्वास को बढ़ाए न कि उसे हतोत्साहित करे।

बच्चा स्कूल आये तो उसके मन में डर नहीं बल्कि उमंग होनी चाहिए।उनका मानना था कि एक दुखी बच्चा कभी कुछ सीख नहीं सकता। स्कूल का माहौल उत्सव जैसा होना चाहिए।

बच्चे का मानसिक विकास प्रकृति के सानिध्य में ही सबसे अच्छा होता है।पेड़,पौधे,पशु ,पक्षी और खुले आसमान के नीचे दी गयी शिक्षा बच्चे की बुद्धि को कुशाग्र और विशाल बनाती है।

उनका एक प्रसिद्ध वाक्य था,कि बच्चे के सोचने की शक्ति उसके स्वास्थ्य से जुड़ी होती है।ताजी हवा , खेलकूद और पौष्टिक आहार को वे गणित या विज्ञान जितना ही महत्वपूर्ण मानते थे।

बच्चों को अपने हाथ से काम करना सिखाना चाहिए।जब बच्चा मिट्टी में काम करता है या कुछ बनाता है,तो वह सृजन का आनंद समझता है।यह उसे आलस्य से दूर रखता है और मेहनतकश लोगों के प्रति सम्मान जगाता है।

बुद्धि को विकसित करने के लिए कल्पना बहुत जरुरी है। परिकथाएं बच्चे के सोच के दायरे को फैलाती हैं और उसमें असंभव कार्यों तथा मेहनतकश लोगों के प्रति सम्मान जगाती हैं। शिक्षक और माता पिता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।सुखलोमिंलिंस्की का मानना था कि घर और स्कूल के विचारों में तालमेल होना अनिवार्य है,वरना बच्चा भ्रमित हो जायेगा।

हर बच्चा अलग-अलग होता है,एक ही तराजू में सबको नहीं तौला जा सकता। शिक्षक कोहरेक बच्चे की विषेश प्रतिभा को पहचानना चाहिए,चाहे वो संगीत हो, पेंटिंग हो,या गणित। बच्चे को हर चीज में सुन्दरता देखना सिखाना चाहिए।एक कविता में,एक पेंटिंग में,या ढलते सूरज में, सुन्दरता की समझ बच्चे के नैतिक चरित्र को ऊंचा उठाती है। शिक्षा का अंत स्कूल छोड़ने पर नहीं होता।एक सफल शिक्षक वह होता है जो बच्चे के मन में हमेशा सीखते रहने की प्यास जगा दे।जिज्ञासा ही ज्ञान का असली रूप है।

कॉरपोरेट की चमक या छिपा अंधेरा?

सुरक्षित कार्यस्थल

संध्या अग्रवाल

लेखक साहित्यकार हैं।

जब शहर सो रहा होता है, तब काँच की इमारतों में हजारों युवा अपने भविष्य के लिए जाग रहे होते हैं। इन चमकती रोशनियों के बीच एक ऐसी दुनिया भी बसती है, जो बाहर से जितनी आकर्षक दिखती है, भीतर से उतनी ही जटिल और कभी-कभी असुरक्षित भी हो सकती है।

आधुनिकता की चमक में नहाया कॉरपोरेट जगत आज युवाओं के लिए अवसर, आत्मनिर्भरता और सपनों को साकार करने का माध्यम बन चुका है। विशेष रूप से बीपीओ और केपीओ जैसे क्षेत्रों ने बड़ी संख्या में युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराया है। परंतु इस चमकदार दुनिया के पीछे कुछ ऐसे अनदेखे प्रश्न भी हैं, जिन पर गंभीरता से विचार किया जाना आवश्यक है–विशेषकर महिलाओं की सुरक्षा और गरिमा से जुड़े प्रश्न।

हाल के समय में कार्यस्थलों पर शोषण, मानसिक दबाव और असुरक्षा से संबंधित घटनाएँ समय-समय पर सामने आती रही हैं। ये घटनाएँ किसी एक संस्था तक सीमित नहीं हैं, बल्कि एक व्यापक प्रवृत्ति की ओर संकेत करती हैं, जहाँ कार्यसंस्कृति के कुछ पक्ष अब पुनर्विचार की माँग कर रहे हैं।

विशेष रूप से नाइट शिफ्ट में कार्यरत युवतियों के लिए चुनौतियाँ और अधिक जटिल हो जाती हैं। रात का समय, सीमित निगरानी और लगातार प्रदर्शन का दबाव–ये सभी कारक मिलकर एक ऐसा वातावरण बना सकते हैं, जहाँ असुरक्षा की संभावना बढ़ जाती है। ऐसे में कार्यस्थल केवल रोजगार का स्थान नहीं, बल्कि विश्वास और सुरक्षा का केंद्र भी होना चाहिए। कॉरपोरेट संस्कृति में टीम आउटिंग, अनौपचारिक मेलजोल और 'फ्रेंडली' माहौल को प्रोत्साहित किया जाता है। लेकिन जब यही माहौल अनकहे दबाव या असहजता का कारण बनने लगे, तब यह आवश्यक हो जाता है कि स्पष्ट सीमाएँ निर्धारित की जाएँ। कई बार युवा, विशेषकर अपने करियर की शुरुआत में, परिस्थितियों को समझने और विरोध करने में संकोच करते हैं–और यही संकोच शोषण की संभावना को जन्म देता है।

डिजिटल युग ने इस चुनौती को और गहरा कर दिया है। व्यक्तिगत जानकारी, तस्वीरों या संवाद का दुरुपयोग, ब्लैकमेलिंग और मानसिक उत्पीड़न जैसे खतरे अब कार्यस्थल की सीमाओं से बाहर निकलकर निजी जीवन तक पहुँचने लगे हैं। यह स्थिति केवल व्यक्तिगत स्तर पर नहीं, बल्कि संस्थागत विश्वसनीयता पर भी प्रश्नचिह्न लगाती है।

ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि संस्थान केवल कार्यकुशलता तक सीमित न रहकर, एक सुरक्षित, सम्मानजनक और संवेदनशील वातावरण सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी भी गंभीरता से निभाएँ। POSH (Prevention of Se&ual Harassment) जैसे कानूनों का प्रभावी क्रियान्वयन, शिकायत निवारण तंत्र की पारदर्शिता और कर्मचारियों के बीच जागरूकता–ये सभी कदम विश्वास की नींव को मजबूत करते हैं।

परिवार और समाज की भूमिका भी इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। युवाओं के साथ खुला संवाद, उनके अनुभवों को सुनना और उन्हें यह विश्वास दिलाना कि वे किसी भी असहज स्थिति के विरुद्ध आवाज उठा सकते हैं–यह सुरक्षा का पहला कदम है।

अंततः, यह समझना होगा कि कॉरपोरेट सफलता का वास्तविक अर्थ केवल आर्थिक प्रगति नहीं, बल्कि मानवीय गरिमा की रक्षा भी है। यदि कार्यस्थल सुरक्षित नहीं है, तो विकास अधूरा है। आधुनिकता का वास्तविक मूल्य तभी है, जब वह हर व्यक्ति को भयमुक्त और सम्मानजनक वातावरण प्रदान करे।

दृष्टिकोण

चैतन्य नागर

लेखक साहित्यकार हैं।

बीतता नहीं, अतीत रीतता नहीं

न दुनिया तो लगातार चलती रहती है। वह चाहे भीतर की दुनिया हो या बाहर की। या तो यह आगे बढ़ती है, या पीछे की ओर। एक जगह स्थिर नहीं रहती। इस निरंतर गतिमान दुनिया में भी हमारे भीतर ऐसा हठी कुछ है जो बार-बार हमसे मुड़ कर पीछे देखने के लिए कहता है। अतीत की सड़कों पर सैर करने का आग्रह करता है।

पुराने एल्बम देखना, बचपन के दोस्तों के बारे में बातें करना, बचपन में सुने गीत गुनगुनाना---कुल मिला कर अतीत की एक रूमानी छवि रचना और फिर उसका महिमामंडन करना---यह मन की गहरी आदतों में शामिल है। 'कोई लौटा दे मेरे बीते हुए दिन'---यह टीस रह-रह कर मन में उठती रहती है। अतीत में जीना एक तरह का कर्मकांड बन गया है जिसमें सभी देर-सवेर हिस्सा लेते हैं। इसे जी-जान से निभाते हैं। धार्मिक कृत्यों की तरह। इतना ही नहीं, अतीत को भूल जाने में कई बार लोगों के मन में अपराध बोध भी होता है। अपने किसी प्रिय जन को याद न करना ग्लानि बोध पैदा कर देता है।

ऐसा ही समझ में आता है कि अतीत को सीने पर लाद कर चलने वाले मन के लिए वर्तमान बस एक संकरा-सा गलियारा होता है। अतीत इसमें से होकर गुजरता है, थोड़ा संशोधित होता है और भविष्य का रूप धर लेता है। वर्तमान के गलियारे में मन रुक नहीं पाता। तुरंत व्यग्र होने लगता है और फिर अतीत की ओर मुड़ता है, या फिर भविष्य की तरफ जो अक्सर वर्तमान के स्पर्श से संशोधित अतीत का ही दूसरा नाम है। अतीत की कमीज़ पहने हुए उसी पुराने मन का सृजन है भविष्य।

अतीत का बोझ साधारण नहीं होता। किसी चट्टान को पीठ पर लादे रहने के समान है यह। अल्बेयर कामू के निबंध संकलन मिथ ऑफ़ सिसिफस' का मुख्य पात्र एक चट्टान को रोज़ धकेल कर एक पहाड़ी के शिखर तक पहुंचाता है, और शाम होते होते वह चट्टान फिर नीचे आ जाती है। यही उसकी पूरी ज़िन्दगी की कहानी है। वास्तव में यह चट्टान अतीत की है और हम सभी इसे धकेल रहे हैं और अपनी पीठ पर भी लादे हुए हैं। हमारे देखने, सुनने, चलने-फिरने और यहाँ तक की रोज़मर्रा के हर काम में अतीत अपनी नाक घुसेड़ता रहता है। लगातार वर्तमान को अपनी भाषा में अनूदित और परिभाषित करता है। अपने तरीके से उसकी व्याख्या करता चला जाता है। उसका मकसद ही यह सुनिश्चित करना है कि मन कहीं से भी, एक क्षण के लिए वर्तमान में ठहर न पाए। वर्तमान क्षण की मार उसके लिए घातक और जानलेवा है, इसकी गहरी समझ कहीं उसे है।

साहित्य में अतीत का महिमामंडन अक्सर देखा जाता है। अतीत को एक ऐतिहासिक सच के रूप में दर्ज करना जरुरी है यह समझा जा सकता है, पर अतीत में हुई घटनाओं को रूमानियत का जामा पहना कर, उसका बढ़-चढ़ कर बखान करना एक अलग बात है। काव्य में तो यह एक स्थापित परंपरा का हिस्सा है। कवि इससे प्रेरणा लेता है। यादों को संजोता है और व्यवस्थित, लुभावने शब्दों में उन्हें सजा कर गर्व महसूस करता है। कभी-कभार वह पुरानी बातों की ओर वापस न लौटने की भी हिदायत देता है। फैज़ अपनी माशूका से कहता है कि वह अब उससे 'पहले सी मोहब्बत' न मांगे, क्योंकि कई नई सच्चाइयां हैं जिनका सामना अब उसे करना है। अक्सर कवि अतीत के पास वापस लौटने की असंभव मांग भी करता है। मसलन, डी एच लॉरेंस अपनी कविता पियानो में कहता है-'एक बच्चे की तरह रोता हूँ मैं, अतीत के लिए'। यह बीते हुए कल में मन का का स्थिरीकरण है जो रुग्णता का रूप भी ले सकता है। पर वर्तमान

में ठहरने के साथ एक बड़ी दिक्कत है कि रचनाकार उसे दर्ज नहीं कर सकता। वर्तमान का तो बस अवलोकन या श्रवण किया जा सकता है। उसमें तो बस चुपचाप ठहरा जा सकता है। जब कवि किसी पुरानी बात, पुराने दुःख या सुख को अपनी रचना में दर्ज करता है, तो वास्तव में वह अपनी पुरानी खरोंचों को ही दर्ज करता है। किसी अनुभव के बासी हुए बगैर उसके बारे में लिखना असंभव है। शायद इसीलिए ज़ेन बौद्ध कवियों ने चंद शब्दों के, तीन पंक्तियों के हाइकू को पसंद किये, जिसे तत्क्षण, अतीत के अनावश्यक हस्तक्षेप के बगैर लिखा जा सकता है। जब यह लिखा जाता है, तब तक अतीत के विचार को स्थगित किया जा सकता है। अतीत इसमें सिर्फ तटस्थ भाषिक ज्ञान के रूप में ही आता है। अतीत के बारे में लिखी बातें कहीं बहुत गहरी और मन को छूने वाली भी हो सकती हैं, पर उनमें ऐसा टटकापन नहीं हो सकता है जो वर्तमान में अवलोकन के समय होता है। फिर वैसा भाव सोच-विचार, विश्लेषण, तुलना और अन्य कई मानसिक और वैचारिक उठापटक के बाद उत्पन्न होता है। भले ही वह स्वतःस्फूर्त दिखे, पर उसमें वह अविलंबता बिलकुल भी नहीं होती। अक्सर हम इस अविलंबता के अभाव को देखने से चूक जाते हैं। शब्दों के सौन्दर्य और भावनाओं की ईमानदारी में फंस जाते हैं। क्योंकि सौंदर्य और अभिव्यक्ति की ईमानदारी तो रचना में होती ही है। इसका तात्पर्य कला को स्मृतियों से मुक्त करने की वकालत करना नहीं, बस यह देखने की जरूरत है कि अभिव्यक्ति में स्मृति की बड़ी भूमिका है और इसलिए उसमें ऐसा टटकापन नहीं जो शायद शब्दों में व्यक्त किया भी नहीं जा सकता। वह भाषा के स्पर्श से दूर छिटक जाता है। इसलिए स्मृतियों पर कवि या किसी भी रचनाकार की निर्भरता को शायद समझा भी जा सकता है। कुछ ऐसे लोग भी हैं, जिन्हें स्मृतियों पर निर्भरता का पूरा मामला बड़ा ही बचकाना लगता है। उनके लिए अतीत में झाँकने का अर्थ है आपका वर्तमान खाली-खंक पड़ा है, उसमें रोचक कुछ भी नहीं बचा। इसके अलावा भविष्य भी बड़ा धुंधला और परिशानियों से भरा हुआ है। ऐसे में अब अतीत के खंडहरों में घूमने-टहलने के अलावा अब बचा ही क्या है? यह सिर्फ कोरी भावुकता की वजह से नहीं होता; इसके गहरे कारण हैं चेतना में। इसे नास्टैल्जिया कहते हैं---जिसमें पुराने दिनों की मीठी और कड़वी यादें मन पर धावा बोलती हैं, कभी सुकून देती हैं और कभी बेचैन कर देती हैं। सवाल उठता है कि क्या अतीत वर्तमान को अधिक समृद्ध बनाता है या यह बस एक तरह की आत्म-वंचना भर है? कभी कभी तो अतीत की सुखद यादें इतनी हावी हो जाती हैं, कि मन जैसे पंगु हो जाता है। दुखद यादों के साथ भी यही होता है। सामने खड़ा वर्तमान दिखाई ही नहीं देता। इस तरह का नॉस्टैल्जिया उदासी और अवसाद का पर्याय बन जाता है। बुढ़ापे में अक्सर लोग इसके शिकार होते हैं। अपने ज़माने के डेढ़ रूपये किलो वाले घी या सौ रुपये तोला वाले सोने के भाव को याद करके गहरी उदासी में डूब जाते हैं। साथ ही अतीत की पनाह वर्तमान से पलायन का भी एक आसान जरिया बन जाती है। कई आधुनिक मनोवैज्ञानिक इसे वर्तमान की दुश्चिंताओं के लिए एक रक्षा कवच की तरह देखते हैं। इसके कारण चिंताएं खत्म तो नहीं होतीं, पर उनके खत्म होने का एक भ्रम जरूर पैदा हो जाता है। इस तरह नॉस्टैल्जिया एक मनोवैज्ञानिक सहारा देता है, एक तरह की बैसाखी भी बनता है खास कर तब जब आप बहुत ही कमज़ोर और बेसहारा महसूस कर रहे हो।

हमारा जटिल मन चित्त की आड़ी-तिरछी रेखाओं पर चलता है। इन रेखाओं को बनाने का काम है विचारों और स्मृतियों का। जीवन सरल और सहज हो इसके लिए जरूरी है कि ये रेखाएं भी सीधी रहें। मन जहाँ तक संभव हो, वर्तमान में ही टिका रहे। पेंडुलम की तरह अतीत और भविष्य के बीच झूले भी तो उसपर नज़र बनी रहे। ख़ास कर बौद्ध धर्म तो इसपर बहुत जोर देता है। कहना तो आसान है, पर करना कठिन। फिर भी कोशिश की जानी चाहिए इसे करने की। मानसिक स्वास्थ्य और शांति के लिए बड़ा जरुरी है यह। यादों को पूरी तरह मिटा देना तो शायद संभव नहीं, बस ऐसा कुछ किया जाए कि वे आयें और चली जाएँ। चाय पानी के लिए घर में बैठ न जाएँ। घर के फर्नीचर का हिस्सा न बन जाएँ।

बाबा साहब का जीवन संघर्ष, शिक्षा और आत्मसम्मान की प्रेरणा देता है- केंद्रीय मंत्री सावित्री ठाकुर

तीसगांव में आयोजित अंबेडकर सम्मान संगोष्ठी में भाजपा जिलाध्यक्ष व पूर्व कैबिनेट मंत्री हुए शामिल

सुबह सवेरे धार । भारत रत्न डॉ अंबेडकर जयंती पखवाड़ा के तहत बदनावर विधानसभा क्षेत्र के गांव तीसगांव में भाजपा द्वारा डॉ आंबेडकर सम्मान संगोष्ठी शनिवार को आयोजित की गई।संगोष्ठी की मुख्य वक्ता केंद्रीय राज्यमंत्री एवं क्षेत्रीय सांसद सावित्री ठाकुर थे। भाजपा जिलाध्यक्ष महंत निलेश भारती ने अध्यक्षता की। विशेष अतिथि के रूप में पूर्व कैबिनेट मंत्री राजवर्धनसिंह दत्तीगांव, जिला पंचायत अध्यक्ष सरदार सिंह मेड़ा, डॉ भीमराव अंबेडकर संगोष्ठी जिला संयोजक विपिन राठौर व सह संयोजक राकेश चौहान व डॉ बलबहादुर सिंह, भाजपा मंडल अध्यक्ष आशीष जैन, अनुसूचित जाति मोर्चा प्रदेश पदाधिकारी प्रवीण चावला, अनुसूचित जाति मोर्चा जिलाध्यक्ष पूनमचंद फकीरा, भाजपा जिला उपाध्यक्ष प्रेमचंद परमार, भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा, भाजपा नेता चतरसिंह बिजुर, रेवसिंह भाबर, रितेश डावर, जितेंद्र मंडलोई, ग्राम पंचायत सरपंच सावित्री डावर, उप सरपंच दशरथ यादव अन्य मंडलो के अध्यक्ष मनीष गुर्जर, गोविंद रघुवंशी, दिलीपसिंह सोलंकी आदि मंचासीन थे। कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. भीमराव अंबेडकर के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर और राष्ट्रगीत %वंदे मातरम% के साथ हुई।

केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर ने संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा कि बाबा साहब ने भारतीय संविधान के निर्माण के माध्यम से देश को एक सशक्त लोकतांत्रिक आधार प्रदान किया। सामाजिक न्याय, समानता और अधिकारों की जो नींव बाबा साहब ने रखी, वही आज भारत की लोकतांत्रिक मजबूती का आधार है। उनका जीवन संघर्ष, शिक्षा और आत्मसम्मान की प्रेरणा देता है। उनके विचार समाज को एकजुट करने और भेदभाव मिटाने का मार्ग दिखाते हैं। बाबा साहब के सिद्धांतों को जन-जन तक पहुंचाना ही सच्ची श्रद्धांजलि है।

पूर्व कैबिनेट मंत्री राजवर्धनसिंह दत्तीगांव ने कहा कि बाबा साहेब भारतीय इतिहास के महान व्यक्तित्व, समाज सुधारक, न्यायविद और संविधान निर्माता थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन सामाजिक समानता, न्याय और मानवाधिकारों की स्थापना के लिए समर्पित कर दिया था, उन्होंने विपरीत परिस्थितियों के बावजूद शिक्षा को अपना सबसे बड़ा हथियार बनाया। उन्होंने कोलंबिया विश्वविद्यालय और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से उच्च शिक्षा प्राप्त कर देश का नाम रोशन किया।

भाजपा जिलाध्यक्ष महंत निलेश भारती ने संबोधित करते हुए कहा कि डॉ. अंबेडकर ने जाति प्रथा और अस्पृश्यता के खिलाफ सशक्त आवाज उठाई। उन्होंने दलितों और वंचित वर्गों के अधिकारों के लिए कई आंदोलन चलाए। वे भारतीय संविधान के मुख्य शिल्पकार थे, जिन्होंने सभी नागरिकों के लिए समान अधिकार, स्वतंत्रता और न्याय सुनिश्चित किया। जिला पंचायत अध्यक्ष सरदार सिंह मेडा ने संबोधित करते हुए कहा कि बाबा साहब की जीवन शैली व उनके सिद्धांत पर चलकर जनकल्याण का काम सभी को करना है। बाबा साहब ने सभी को समानता का अधिकार दिया।

कार्यक्रम में विभिन्न स्कूलों के मेधावी छात्र छात्राओं, दिव्यांगजनो व अन्य समाजजनों को भी शील्ड प्रदान कर सम्मानित किया गया। संचालन राकेश चौहान ने किया। बड़ी संख्या में गांववासी मौजूद थे।

प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान शिविर में 587 गर्भवती महिलाओं की जांच, 346 हाई रिस्क मिली

बैतूल। गर्भावस्था से संबंधित जटिलताओं का पता लगाने और समय रहते उनका उपचार सुनिश्चित कर सुरक्षित प्रसव करवाने के लिए प्रतिमाह 9 एवं 25 तारीख को प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान का आयोजन किया जाता है मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ मनोज कुमार हुरमा ने बताया कि शनिवार को जिले में आयोजित प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान शिविर में 587 गर्भवती महिलाओं की जाचं एवं 346 हाई रिस्क चिन्हित तथा 79 सोनोग्राफी की गईं। शिविर में सभी महिलाओं की खून की जांच एवं जीडीएम की जांच की गई। जिला चिकित्सालय बैतूल में आयोजित प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान शिविर में स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ वंदना धाकड़ द्वारा 55 गर्भवती महिलाओ की चिकित्सकीय जांच की गई, जिसमें 19 गर्भवती महिलाओं को हाई रिस्क के रूप में चिन्हित किया गया, 79 गर्भवती महिलाओं की सोनोग्राफी की गई।

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र घोडाडोंगरी में स्त्री रोग चिकित्सक (पीजीएमओ) डॉ कविता कोरी द्वारा 50 गर्भवती महिलाओं की जांच, जिसमें 46 हाई रिस्क महिलाओं की जांच की गई। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र सेहरा में महिला चिकित्सा अधिकारी डॉ नीलम महाजन द्वारा 55 गर्भवती महिलाओं की जांच की गई, जिसमें 14 हाई रिस्क महिलाएं पाई गई। सिविल अस्पताल आमला में महिला चिकित्सा अधिकारी डॉ ईवान जेम्स द्वारा 35 गर्भवती महिलाओं की जांच, जिसमें हाई रिस्क 16 महिलाएं पाई गई। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र भैंसदेही में डॉ बसीम खान एवं डॉ रेशमा खान द्वारा 37 गर्भवती महिलाओं की जांच, जिसमें 29 हाई रिस्क महिलाएं पाई गई। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र शाहपुर में महिला चिकित्सा अधिकारी डॉ महिमा सिंह द्वारा 70 गर्भवती महिलाओं की जांच, जिसमें 34 हाई रिस्क महिलाएं पाई गई। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र आठनेर में खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ सचिन आहतकर द्वारा 20 गर्भवती महिलाओं की जांच जिसमें, 11 हाई रिस्क महिलाएं पाई गई। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मुलताई में स्त्री रोग चिकित्सक डॉ सरिता कालभोर द्वारा 43 गर्भवती महिलाओं की जांच, जिसमें 29 हाई रिस्क महिलाएं पाई गई। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र चिचोली में स्त्री रोग चिकित्सक डॉ तरूणा काकोडिया द्वारा 121 गर्भवती महिलाओं की जांच, जिसमें हाई रिस्क 121 महिलाएं पाई गई। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र प्रभात पट्टन में स्त्री रोग चिकित्सक डॉ सोनाली मरकाम द्वारा 39 गर्भवती महिलाओं की जांच, जिसमें 20 हाई रिस्क महिलाओं की जांच की गई। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र भीमपुर में स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ ईशा डेनियल द्वारा 62 गर्भवती महिलाओं की जांच की गई, जिसमें 26 हाई रिस्क महिलाएं पाई गई।

नाबालिग के अपहरण और दुष्कर्म का मामला

आरोपी गिरफ्तार बालिका सकुशल बरामद

मुलताई/बैतूल। नाबालिग बालिका के अपहरण और दुष्कर्म के गंभीर मामले में पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। साथ ही पीड़िता को सुरक्षित बरामद कर परिजनों को सौंप दिया गया है। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार, 27 नवंबर 2025 को फरियादी ने थाना मुलताई में रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि अज्ञात व्यक्ति उनकी नाबालिग पुत्री को बहला-फुसलाकर अपने साथ ले गया है। शिकायत के आधार पर पुलिस ने अज्ञात आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू की। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने तत्काल एक विशेष टीम का गठन किया। टीम ने संभावित ठिकानों पर लगातार दबिश दी और मुखबिर तंत्र के साथ-साथ तकनीकी साक्ष्यों का सहारा लेकर बालिका और आरोपी की तलाश जारी रखी।

बालिका सुरक्षित मिली, आरोपी की हुई पहचान... लगातार प्रयासों के बाद 24 अप्रैल 2026 को पुलिस ने नाबालिग बालिका को सकुशल बरामद कर लिया। पूछताछ में बालिका ने बताया कि आरोपी सागर खपरिये (23 वर्ष), निवासी ग्राम लाखापुर, थाना मुलताई उसे बहला-फुसलाकर ले गया और उसके साथ जबरदस्ती दुष्कर्म किया। ग्राम लाखापुर से आरोपी गिरफ्तार सूचना के आधार पर पुलिस ने ग्राम लाखापुर में दबिश देकर आरोपी को 24 अप्रैल 2026 को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी को विधिवत न्यायालय में पेश किया गया, जहां आगे की कानूनी कार्रवाई जारी है। इन पुलिसकर्मियों की रही अहम भूमिका इस कार्रवाई में थाना प्रभारी निरीक्षक नरेन्द्र सिंह परिहार, उपनिरीक्षक सुनील सरेयाम, उपनिरीक्षक मोनिका पटले, आरक्षक मेघा धुर्वे, प्रिंस, अरविन्द एवं सैनिक ज्वालासिंह की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

बहनों का यह आक्रोश समाज में लाएगा जागृति : हेमंत खंडेलवाल

महिला आक्रोश सम्मेलन सहित जन आक्रोश पदयात्रा संपन्न

बैतूल। जिला भाजपा कार्यालय विजय भवन में महिला जन आक्रोश को लेकर महिला जन आक्रोश सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन को संबोधित करते भाजपा प्रदेशाध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने कहा कि हमारे समाज की शक्ति बहने है जिस समाज और राष्ट्र में महिलाओं को अधिकार से वंचित किया वे समाज और राष्ट्र समाप्त हो गए। हम शुरुआत से ही महिला सशक्तिकरण के लिए कार्य कर रहे है। लोकसभा में जिस तरह विपक्ष ने नारी शक्ति वंदन अधिनियम की खिलाफत की है उसके खिलाफ आज महिलाएं आक्रोशित है। महिलाओं का यह आक्रोश हर गली और गांव सहित देश में जाग्रति का काम करेगा। सम्मेलन को संबोधित करते हुए केन्द्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उइके ने कहा कि व्यक्ति, परिवार, समाज ,राष्ट्र और विश्व की शक्ति नारी शक्ति है। परिवारवादी राजनीतिक दलों ने महिलाओं को उनके अधिकार से वंचित करने का काम किया है। ऐसे राजनीतिक दल सिर्फ अपने परिवार की महिलाओं के लिए प्रतिबद्ध है। इन राजनीतिक दलों के लिए सत्ता भोग का विषय है भाजपा के लिए राष्ट्र सेवा का संबध हम इस तरह समझ सकते है कि हमने राष्ट्र को माता की तरह प्रेम किया है। वहीं कांग्रेस के लिए प्रियंका और सोनिया और अखिलेश के लिए उनकी पत्नी डिम्पल यादव ही सर्वेसर्वा है। हम सबकी भागीदारी नीति निर्धारण में चाहते है। सम्मेलन को संबोधित करते जिलाध्यक्ष सुधाकर पंवार

ने कहा कि इंडी गठबंधन ने देश की आधी आबादी की आकांक्षाओं का गला लोकसभा सत्र में घोटा है। महिलाएं इस अपमान को कभी माफ नहीं करेगीं। जिन लोगों ने महिलाओं के अधिकारों के साथ लोकसभा में वंचित किया उन राजनीतिक दलों को भविष्य में महिलाएं सबक सिखाएगीं। सम्मेलन को संबोधित करते हुए पूर्व राष्ट्रीय सचिव पूर्व सांसद ज्योति धुर्वे ने कहा कि आजादी के बाद पहली बार भाजपा ने कही महिला आरक्षण की बात कहीं देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महिलाओं को उनका हक दिलाने का प्रयास किया। लेकिन कांग्रेस और उसके सहयोगियों ने महिलाओं को उनके हक से वंचित किया। अपने हक के लिए हम हर पल संघर्ष करेंगे और अपने हक को लेकर रहेगें। सम्मेलन को संबोधित करते हुए घोड़ाडोंगरी विधायक गंगा उइके ने कहा कि जब कोई कार्य करने की हमारी मंशा हो और लोग उस कार्य को बिगाडे तो हमे गुस्सा आता है। कांग्रेस ने जानबूझकर महिलाओं का अपमान किया है। उस अपमान से हर महिला आक्रोशित है हमारी संस्कृति में हर धार्मिक सामाजिक कार्यो की शुरूवात में हम कन्या पूजन करते है। इसी प्रकार का महत्व राजनीति में भी मिलना चाहिए। लेकिन कांग्रेसी और उसके सहयोगी महिलाओं को सम्मान की नजर से नही देखते मोदी जी के नेतृत्व में शौचालय निर्माण , तीन तलाक और हर घर नल से जल जैसी योजनाएं महिलाओं के मान और सम्मान के रक्षा करने वाली है। सम्मेलन को संबोधित करते हुए आमला विधायक डा.योगेश पंडाग्रे ने कहा कि भाजपा ने शुरुआत से ही महिलाओं के सशक्तिकरण का कार्य किया है। लाडली लक्ष्मी योजना हो या लाडली बहना योजना, पंचायत व निकाय चुनाव में 50 प्रतिशत आरक्षण भाजपा के रीति नीति का परिणाम है। लेकिन कांग्रेस ,टीएमसी और डीएमके ने नारी शक्ति वंदन अधिनियम के विधेयक को गिराने का काम किया है। इन्हे महिलाओं का श्राप लगेगा। सम्मेलन को संबोधित करते हुए भैंसदेही विधायक महेन्द्रसिंह चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में ऐतिहासिक निर्णय लिए गए है धारा 370 हटाना हो या तीन तलाक का मुद्दा हर जगह निर्णयों की शक्ति देखी जा सकती है। मोदी जी ने देश की महिलाओं को नीति निर्धारण में शामिल करने के लिए प्रयास किया तो कांग्रेस के सहयोगियों ने महिलाओं के खिलाफत में जाकर वोट किया जो महिलाएं हमेशा याद रखेगी। सम्मेलन को संबोधित करते हुए जिला महामंत्री कमलेश सिंह ने कहा कि 70 साल बाद देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने विधानसभा और लोकसभा में महिलाओं को आरक्षण मिलें। 2047 के विकसित भारत में महिलाओं की भागीदारी बराबर हो इसके लिए 2011 की जनगणना को आधार बनाकर विधेयक लाया जिसको लेकर महिलाएं उत्साहित थी आशावित थी लेकिन कांग्रेस ने महिलाओं के साथ विश्वास घात किया और खुशियां आक्रोश में बदल गई। भाजपा हमेशा महिलाओ के साथ है धोखा करने वालों को हम मिलकर सबक सिखाएगें। सम्मेलन के पश्चात रैली की शक्ल में महिलाओं ने भाजपा कार्यालय विजय भवन से गंज माता मंदिर तक पहुंचकर इंडी गठबंधन के सहयोगियों का पूतला फूंका और नारी शक्ति के पक्ष में गगनभेदी नारे लगाए। सम्मेलन का संचालन जिला उपाध्यक्ष रश्मि साहू ने किया। अंत में आभार महिला मोर्चा प्रदेश मंत्री एवं जिलाध्यक्ष ममता मालवी ने व्यक्त किया।

जागरूकता रथ को हरी झण्डी दिखाकर किया रवाना

बैतूल। विश्व मलेरिया दिवस पर मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ मनोज कुमार हुरमाडे द्वारा शनिवार को सीएमएचओ कार्यालय से हरी झण्डी देकर मलेरिया रथ को रवाना किया गया। सीएमएचओ डॉ हुरमाड़े ने बताया कि मलेरिया एक संक्रामक रोग है, जो संक्रमित मादा एनाफिलीज मच्छर के काटने से होता है। मलेरिया 5 प्रकार का होता है। बैतूल जिले में प्रमुखत- 2 प्रकार का मलेरिया पाया जाता हैं, पहला है प्लाजमोडियम वाइवेक्स मलेरिया और दूसरा प्लाजमोडियम फेल्सीपेरम मलेरिया। मलेरिया के सामान्य लक्षण हैं, तेज बुखार, सर दर्द, ठंड लगना, कंपकंपी आना, पसीना आना, लेकिन गंभीर स्थिति में उल्टी होना, डायरिया तथा मरीज कोमा में भी जा सकता है और मृत्यु भी हो सकती है। अत-मरीज को गंभीर स्थिति में जाने से बचाने के लिए अविलंब खून की जांच तथा मलेरिया पाए जाने पर तुरंत उपचार देना आवश्यक है। उपचार से तात्पर्य पूर्ण उपचार से है, वाइवैक्स मलेरिया में 14 दिनों तक उपचार दिया जाता है एवं फेल्सीपेरम मलेरिया में 3 दिनों तक उपचार दिया जाता है। यदि संक्रमित व्यक्ति को मादा एनाफिलीज मच्छर काट ले और यह मच्छर किसी स्वस्थ व्यक्ति को काटे तो मलेरिया फैल सकता है। मच्छर के काटने से लक्षण प्रकट होने के बीच के समय को इनक्यूबेशन पीरियड कहते हैं तथा यह 9 से 14 दिनों तक का होता है। मलेरिया से लीवर, लाल रक्त कोशिकाएं तथा गंभीर स्थिति में किडनी एवं दिमाग भी प्रभावित होते हैं। इस अवसर पर जिला टीकाकरण अधिकारी डॉ प्रांजल उपाध्याय, जिला मलेरिया अधिकारी जितेन्द्र सिंह राजपूत, डीपीएम डॉ विनोद शाक्य, सीएमएचओ कार्यालय स्टाफ, मलेरिया कार्यालय का स्टाफ, बैतूल शहरी स्टाफ आशा कार्यकर्ता मौजूद रहे।

बीजादेही छात्रावास व स्वास्थ्य केंद्र का कलेक्टर ने किया निरीक्षण, छात्रों के साथ खेला वॉलीबॉल

बैतूल। कलेक्टर डॉ. सौरभ संजय सोनवणे ने गत दिवस शाहपुर भ्रमण के दौरान ग्राम बीजादेही स्थित राजा शंकर शाह-रघुनाथ शाह सीनियर बालक छात्रावास का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का बारीकी से अवलोकन किया। इस दौरान उन्होंने छात्रावास में रह रहे छात्रों से संवाद कर नाश्ते व भोजन की उपलब्धता, समयबद्धता, उनके गृह ग्राम तथा अधीक्षक के व्यवहार के संबंध में जानकारी ली। कलेक्टर डॉ सोनवणे ने छात्रावास में स्मार्ट क्लास, कंप्यूटर लैब और पुस्तकालय का निरीक्षण किया। स्मार्ट क्लास का नियमित संचालन नहीं पाए जाने पर उन्होंने नाराजगी जताते हुए कहा कि वर्तमान समय में ई-कंटेंट के माध्यम से अध्ययन अत्यंत आवश्यक है, इसलिए स्मार्ट क्लास का नियमित संचालन सुनिश्चित किया जाए। कंप्यूटर कक्ष के निरीक्षण के दौरान उन्होंने विद्यार्थियों के कंप्यूटर ज्ञान का भी परीक्षण किया। पुस्तकालय निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने निर्देश दिए कि अनिवार्य पुस्तकों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए तथा पुस्तकों को सुव्यवस्थित ढंग से रखा जाए, ताकि छात्र आसानी से विषयवार पुस्तकों का चयन कर सकें। उन्होंने बीईओ को निर्देशित किया कि सभी छात्रावासों में कंप्यूटर लैब एवं पुस्तकालय पूर्ण रूप से क्रियाशील रहें। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने भोजनशाला का भी जायजा लिया और कर्मचारियों से भोजन निर्माण व वितरण के समय की जानकारी ली। उन्होंने निर्देश दिए कि निर्धारित मेन्यू के अनुसार ही गुणवत्तापूर्ण भोजन तैयार कर छात्रों को समय पर उपलब्ध कराया जाए।

जनगणना कार्य के लिए जिले के 3179 प्रशिक्षणार्थी हुए दक्ष

प्रगणकों एवं पर्यवेक्षकों का प्रशिक्षण संपन्न, 1 मई से 30 मई तक होगा सर्वे

बैतूल। जिले में जनगणना 2027 के प्रथम चरण अंतर्गत मकान सूचीकरण एवं मकानों की गणना को प्रभावी, सटीक एवं समयबद्ध रूप से संपन्न कराने के उद्देश्य से प्रगणकों एवं पर्यवेक्षकों का प्रशिक्षण अभियान सुदृढ रूप से संचालित किया गया। कलेक्टर एवं प्रमुख जनगणना अधिकारी डॉ. सौरभ संजय सोनवणे के नेतृत्व तथा अपर कलेक्टर एवं जिला जनगणना अधिकारी श्रीमती वंदना जाट के मार्गदर्शन में नगरीय एवं ग्रामीण चार्ज मुख्यालयों पर आयोजित यह प्रशिक्षण फील्ड स्तर पर कार्यकुशलता एवं गुणवत्ता सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित होगा। जिला योजना अधिकारी एवं अतिरिक्त जिला जनगणना अधिकारी नरेंद्र कुमार गौतम ने बताया कि जनगणना 2027 के शुभंकर प्रगति और विकास हैं। महिला प्रगणक प्रगति तथा पुरुष प्रगणक विकास को दर्शाते हैं। प्रशिक्षण लेने वाले प्रगणक एवं पर्यवेक्षक प्रगति और विकास की भूमिका निभाते हुये विकसित भारत -2047 के लिये नीतियों के निर्माण का आधारभूत डाटाबेस तैयार करने की अहम कड़ी है, जो जनगणना का कार्य करेंगे। जनगणना कार्य हेतु प्रगणक एवं पर्यवेक्षक 1 मई से 30 मई तक घर-घर जाकर निर्धारित 33 सवालों के जवाब संकलित करने का कार्य करेगें।

तीन चरणों में प्रशिक्षण का आयोजन- उन्होंने बताया कि जिले में प्रगणकों एवं पर्यवेक्षकों का प्रशिक्षण तीन चरणों में सुव्यवस्थित रूप से आयोजित किया गया। प्रथम चरण 15 से 17 अप्रैल 2026 में 9 ग्रामीण चार्जों के अंतर्गत कुल 857 प्रशिक्षार्थी, जिनमें 733 प्रगणक एवं 124 पर्यवेक्षक शामिल रहे। द्वितीय चरण 19 से 21 अप्रैल 2026 में 10 ग्रामीण चार्जों के 731 प्रगणक एवं 124 पर्यवेक्षक तथा 4 नगरीय चार्जों के 206 प्रगणक एवं 25 पर्यवेक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। तृतीय चरण 23 से 25 अप्रैल 2026 में 10 ग्रामीण चार्जों के 746 प्रगणक एवं

127 पर्यवेक्षक तथा 9 नगरीय चार्जों के 296 प्रगणक एवं 57 पर्यवेक्षकों को प्रशिक्षित किया गया। इस प्रकार जिले में कुल 2712 प्रगणक एवं 467 पर्यवेक्षकों सहित कुल 3179 प्रशिक्षणार्थी का प्रशिक्षण सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

प्रशिक्षण के प्रथम दिवस में प्रतिभागियों को जनगणना की आधारभूत जानकारी, विधिक प्रावधानों एवं दायित्वों के साथ एचएलओ मोबाइल एप की उपयोगिता से परिचित कराया गया। द्वितीय दिवस में एप के 33 प्रश्नों के संकलन, डेटा प्रविष्टि एवं सत्यापन की प्रक्रिया पर विस्तृत प्रशिक्षण दिया गया। वहीं तृतीय दिवस में क्या करें क्या न करें, डेटा सुरक्षा तथा फील्ड कार्य से संबंधित व्यवहारिक पहलुओं पर विशेष मार्गदर्शन प्रदान किया गया। प्रत्येक प्रशिक्षण को और अधिक प्रभावी बनाने हेतु स्वयं तहसीलदार एवं चार्ज अधिकारियों द्वारा फील्ड स्तर पर रोल प्ले के माध्यम से प्रतिभागियों को हैंड्स ऑन के लिए विभिन्न ग्रामों/वार्डों में ले जाकर व्यावहारिक अनुभव भी प्रदान किया गया।

स्व-गणना पर विशेष मार्गदर्शन- उन्होंने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान प्रगणकों एवं पर्यवेक्षकों को स्व-गणना की प्रक्रिया, आमजनों से एसई आईडी प्राप्त कर सत्यापन करने की प्रक्रिया समझाई गयी। साथ ही प्रशिक्षणार्थियों द्वारा आमजन को स्वगणना के लिए प्रेरित करने संबंधी महत्वपूर्ण बिंदुओं से अवगत कराया गया, ताकि अधिक से अधिक सहभागिता सुनिश्चित की जा सकें।कलेक्टर एवं प्रमुख जनगणना अधिकारी डॉ. सौरभ संजय सोनवणे के आदेशानुसार और जिला जनगणना अधिकारी श्रीमती वंदना जाट के गहन पर्यवेक्षण में सभी चार्जों में प्रशिक्षण की गुणवत्ता पर विशेष फोकस किया गया।

कर्तव्य निष्ठा के साथ दायित्वों के निर्वहन का आह्वान- कलेक्टर एवं प्रमुख जिला जनगणना अधिकारी के आदेशानुसार प्रशिक्षण के समस्त दिवसों में अपर कलेक्टर, अनुविभागीय जनगणना अधिकारियों (राजस्व) तथा अतिरिक्त जनगणना अधिकारी द्वारा प्रशिक्षण सत्रों में प्रत्यक्ष उपस्थिति से प्रतिभागियों को संबोधित करके प्रेरणा दी एवं जनगणना 2027 को एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय दायित्व के रूप में रेखांकित किया गया। अधिकारियों द्वारा प्रगणकों एवं पर्यवेक्षकों को फील्ड कार्य पर विशेष फोकस कराया गया ताकि वे प्रत्येक परिवार तक पहुंच सुनिश्चित करें तथा विनम्र, संवेदनशील एवं उत्तरदायी दृष्टिकोण अपनाते हुए सटीक एवं पूर्ण जानकारी का संकलन करें, जिससे जनगणना कार्य की गुणवत्ता एवं विश्वसनीयता सुनिश्चित की जा सके।

आदि गुरु शंकराचार्य जयंती पर व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित

आदि गुरु सनातन धर्म के सूत्रवाहक एवं अद्वैतवाद के ध्वजवाहक हैं

बैतूल। मप्र जन अभियान परिषद, जिला बैतूल द्वारा शासकीय जयवंती हक्सर स्नातकोत्तर महाविद्यालय में आदि गुरु शंकराचार्य जी की जयंती के अवसर पर व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में गायत्री परिवार से गोसेवक उत्तम गायकवाड़, वरिष्ठ समाजसेवी योगी खंडेलवाल, संभाग समन्वयक कौशलेश प्रताप तिवारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा आदि गुरु शंकराचार्य के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन कर किया गया। जिला समन्वयक श्रीमती प्रिया चौधरी ने अतिथियों का स्वागत एवं परिचय कराते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि आदि गुरु शंकराचार्य जयंती के उपलक्ष्य में उनके राष्ट्र निर्माण में योगदान, व्यक्तित्व एवं कृतित्व से समाज को अवगत कराने हेतु जिले में 22 से 30 अप्रैल 2026 तक 51 स्थानों पर जिला स्तरीय व्याख्यानमाला का आयोजन किया जा रहा है। वरिष्ठ समाजसेवी योगी

खंडेलवाल ने अपने उद्बोधन में कहा कि आदि शंकराचार्य अद्वैतवाद के ध्वजवाहक हैं और उनका अखंड विश्वास मानव एकता एवं भाईचारे पर आधारित था। वे भारतीय दर्शन के महान तत्वज्ञानी थे तथा वर्तमान सनातन धर्म उनके द्वारा प्रतिपादित स्वरूप से आलोकित है। मुख्य अतिथि उत्तम गायकवाड़ ने कहा कि आदि गुरु शंकराचार्य ने संपूर्ण भारत में भ्रमण कर वैदिक सनातन धर्म की पुनर्स्थापना की। वे सनातन धर्म के पुनरुद्धारक, चारों वेदों पर आधारित शैक्षिक व्यवस्था के प्रणेता एवं सर्व शास्त्रार्थ विजेता थे। संभाग समन्वयक कौशलेश प्रताप तिवारी ने बताया कि शंकराचार्य ने भारत को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया तथा चारों दिशाओं में चार मठों की स्थापना कर समाज में एकता स्थापित की। कार्यक्रम में शंकराचार्य के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया गया कि उन्होंने अल्पायु में ही गृह त्याग कर समाज को एकजुट करने का कार्य किया। वर्तमान समय में भी समाज को जाति एवं वर्ग भेद मिटाकर राष्ट्र सर्वोपरि की भावना से कार्य करने की आवश्यकता है। कार्यक्रम का संचालन परामर्शदाता सुनील शंकर पंवार द्वारा किया गया तथा आभार प्रदर्शन परामर्शदाता राजू आठनेरे ने किया। उन्होंने सभी सहभागियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन के लिए ग्राम स्तर पर कार्य करना अत्यंत आवश्यक है। कार्यक्रम में जन अभियान परिषद की प्रस्फुटन समिति, नवांकुर समिति, मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास पाठ्यक्रम के छात्र-छात्राओं एवं परामर्शदाताओं ने सक्रिय सहभागिता की।

सूरज के 'प्रेम' की 12 साल बाद वापसी

फैमिली एंटरटेनमेंट सिनेमा के लिए पहचाने जाने वाले मशहूर फिल्ममेकर सूरज बड़जात्या एक बार फिर अपने क्लासिक अंदाज़ में दर्शकों के बीच लौटने की तैयारी में हैं। 'मैंने प्यार किया' जैसी आइकॉनिक फिल्म बनाने वाले सूरज बड़जात्या अब अपनी नई फिल्म 'ये प्रेम मोल लिया' लेकर आ रहे हैं, जिसका आधिकारिक ऐलान हो चुका है। यह फिल्म एक म्यूजिकल फैमिली एंटरटेनर होगी, जिसमें रिश्तों की गर्माहट, भावनाओं की गहराई और संगीत का खूबसूरत मेल देखने को मिलेगा।

नई फिल्म 'ये प्रेम मोल लिया' में पहली बार आयुष्मान खुराना और शरवरी वाघ की जोड़ी बड़े पर्दे पर नजर आएगी। दोनों कलाकार अपने-अपने अलग अंदाज और अभिनय क्षमता के लिए जाने जाते हैं, और यही वजह है कि इस नई जोड़ी को लेकर दर्शकों में खासा उत्साह देखने को मिल रहा है। फिल्म 27 नवंबर को सिनेमाघरों में रिलीज की जाएगी, जिससे यह साल के अंत में फैमिली ऑडियंस के लिए एक बड़ा आकर्षण बन सकती है। फिल्म का निर्माण राजश्री प्रोडक्शन और महावीर जैन फिल्म्स मिलकर कर रहे हैं। राजश्री प्रोडक्शन लंबे समय से पारिवारिक फिल्मों के लिए जाना जाता रहा है, जिसने 'हम आपके हैं कौन' और 'विवाह' जैसी फिल्मों के जरिए दर्शकों के दिलों में खास जगह बनाई है। ऐसे में 'ये प्रेम मोल लिया' से भी उसी तरह की सादगी और भावनात्मक जुड़ाव की उम्मीद की जा रही है।

इस फिल्म की सबसे खास बात है राजश्री फिल्मों का लोकप्रिय किरदार 'प्रेम', जिसकी करीब 12 साल बाद बड़े पर्दे पर वापसी हो रही है। इससे पहले यह किरदार सलमान खान जैसे स्टार्स निभा चुके हैं और इसे दर्शकों ने खूब पसंद किया था। अब पहली बार इस किरदार को आयुष्मान खुराना निभाते नजर आएंगे। आयुष्मान अपनी अलग तरह की फिल्मों और सामाजिक विषयों पर आधारित किरदारों के लिए जाने जाते हैं, इसलिए उनका 'प्रेम' का किरदार निभाना एक दिलचस्प बदलाव माना जा रहा है। वहीं, शरवरी वाघ का किरदार पारंपरिक राजश्री हीरोइन की छवि को दर्शाएगा–जिसमें सादगी, संस्कार और भावनात्मक मजबूती का मेल होगा। फिल्म में उनके किरदार को इस तरह गढ़ा गया है कि वह आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन बनाती नजर आएंगी। दोनों कलाकारों की ऑन-स्क्रीन केमिस्ट्री फिल्म का बड़ा आकर्षण हो सकती है।

संगीत की बात करें तो फिल्म का म्यूजिक हिमेश रेशमिया तैयार कर रहे हैं, जो लंबे समय बाद सूरज बड़जात्या के साथ काम कर रहे हैं। इससे पहले दोनों ने 'प्रेम रतन धन पायो' में साथ काम किया था, जिसका संगीत काफी लोकप्रिय हुआ था। ऐसे में 'ये प्रेम मोल लिया' के गानों से भी दर्शकों को काफी उम्मीदें हैं। फिल्म में पारंपरिक मेलोडी और आधुनिक संगीत का मिश्रण देखने को मिल सकता है। सूरज बड़जात्या हाल ही में अपनी फिल्म 'ऊंचाई' के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार जीत चुके हैं, जिससे उनकी निर्देशन क्षमता को एक बार फिर सराहा गया। 'ऊंचाई' के बाद यह उनकी अगली बड़ी परियोजना है, और वह फिर से अपने मूल जॉनर फैमिली ड्रामा की ओर लौट रहे हैं। यह वही जॉनर है जिसने उन्हें भारतीय सिनेमा में एक अलग पहचान दिलाई।

फिल्म इंडस्ट्री के जानकारों का मानना है कि 'ये प्रेम मोल लिया' ऐसे समय में आ रही है जब दर्शक फिर से साफ-सुथरी पारिवारिक फिल्मों की ओर आकर्षित हो रहे हैं। हाल के वर्षों में एक्शन और थ्रिलर फिल्मों के बीच फैमिली एंटरटेनर की कमी महसूस की जा रही थी, जिसे यह फिल्म पूरा कर सकती है। कुल मिलाकर, 'ये प्रेम मोल लिया' सिर्फ एक फिल्म नहीं बल्कि एक भावनात्मक अनुभव होने का दावा कर रही है जहां रिश्तों की अहमियत, प्यार की सादगी और परिवार की ताकत को बड़े पर्दे पर खूबसूरती से दिखाया जाएगा। अब देखना दिलचस्प होगा कि आयुष्मान खुराना का 'प्रेम' दर्शकों के दिलों में वही जगह बना पाता है या नहीं, जो पहले इस किरदार ने बनाई थी।

'राजा शिवाजी' का आगाज़, फीस से बढ़ा उत्साह

ऐतिहासिक फिल्मों के शौकीनों के लिए अच्छी खबर है कि 'राजा शिवाजी' 1 मई को सिनेमाघरों में दस्तक देने के लिए तैयार है। यह फिल्म न सिर्फ अपनी कहानी बल्कि अपनी दमदार स्टारकास्ट और बड़े बजट के चलते पहले से ही चर्चा में बन गई। खास बात यह है कि फिल्म में लीड रोल निभाने के साथ-साथ निर्देशन की जिम्मेदारी भी रितेश देशमुख ने संभाली है। फिल्म में रितेश देशमुख महान मराठा योद्धा छत्रपति शिवाजी महाराज के किरदार में नजर आएंगे। इस रोल के लिए उन्होंने खुद को पूरी तरह से तैयार किया है। इसके लिए उन्हें लगभग 15 से 18 करोड़ रुपये की फीस मिली है।

रितेश के साथ उनकी पत्नी जेनेलिया डिसूजा भी फिल्म में अहम भूमिका निभा रही हैं। वह सईबाई भोसले के किरदार में नजर आएंगी। इस भूमिका के लिए जेनेलिया को करीब 1 से 2 करोड़ रुपये की फीस दी गई है। फिल्म की स्टारकास्ट को और मजबूत बनाते हैं अभिषेक बच्चन, जो संभाजी शाहजी भोसले के किरदार में दिखाई देंगे। फिल्म में खलनायक की भूमिका निभा रहे संजय दत्त अफजल खान के किरदार में नजर आएंगे। ट्रेलर रिलीज के बाद से ही उनके लुक और अभिनय की काफी तारीफ हो रही है।

इसके अलावा, महेश मांजरेकर फिल्म में लखुजी जाधव का किरदार निभा रहे हैं। 'राजा शिवाजी' को एक भव्य ऐतिहासिक एक्शन ड्रामा के रूप में तैयार किया गया है, जिसमें युद्ध, राजनीति और भावनाओं का संतुलन देखने को मिलेगा। फिल्म का उद्देश्य न केवल शिवाजी महाराज के साहस और रणनीति को दिखाना है, बल्कि उनकी मानवीय संवेदनाओं और नेतृत्व क्षमता को भी बड़े पर्दे पर जीवंत करना है। बड़े सितारों, भारी बजट और मजबूत कहानी के साथ 'राजा शिवाजी' से बॉक्स ऑफिस पर शानदार प्रदर्शन की उम्मीद की जा रही है।

रियल बॉक्स

बॉक्स ऑफिस पर ढेर, दिग्गजों के सपने

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

हिंदी सिनेमा के सौ से भी ज्यादा सालों के शानदार सफर में हम अक्सर उन ऊंचाइयों की चर्चा करते हैं जिन्हें 'शोले', 'मुगल-ए-आजम' या 'दंगल' जैसी फिल्मों ने छुआ। बॉक्स ऑफिस के जादुई आंकड़े, करोड़ों का कारोबार और सिल्वर जुबली के जश्न फिल्मी गलियारों की रौनक बढ़ाते हैं। लेकिन इस चकाचौंध के पीछे एक स्याह और खामोश कोना और भी है, जहाँ उन फिल्मों का ढेर लगा है जिन्हें दर्शकों ने सिरे से नकार दिया। किसी भी कला के इतिहास में असफलता उतनी ही महत्वपूर्ण और कड़वी होती है जितनी सफलता मीठी, क्योंकि हर फ्लॉप फिल्म फिल्मकारों के लिए एक सबक और दर्शकों के बदलते मिजाज का आईना छोड़कर जाती है। आज हम फिल्म इतिहास के उसी 'विफल' अध्याय को पलटेंगे और समझेंगे कि आखिर वे कौन सी महत्वाकांक्षी फिल्में थीं जो भारी-भरकम बजट, चमचमाते सितारों और दिग्गज निर्देशकों के बावजूद दर्शकों के दिल के दरवाजे तक पहुँचने में बुरी तरह नाकाम रहीं।

भारतीय सिनेमा में असफलता की पहली सबसे बड़ी और ऐतिहासिक गूंज तब सुनाई दी, जब 'शोमैन' राज कपूर ने अपना सब कुछ दांव पर लगाकर 'मेरा नाम जोकर' बनाई थी। आज भले ही हम इसे एक 'कल्ट क्लासिक' मानते हैं और इसकी दार्शनिकता की मिसाल देते हैं, लेकिन 1970 में जब यह रिलीज हुई, तो इसे भारतीय सिनेमा की सबसे बड़ी व्यापारिक आपदाओं में गिना गया। दर्शकों ने इसके भारी-भरकम साढ़े चार घंटे के रनटाइम और फिल्म की अत्यधिक दार्शनिक गंभीरता को स्वीकार नहीं किया। फिल्म का कथानक एक सर्कस के जोकर के जीवन के तीन पड़ावों और उसकी असफल प्रेम कहानियों के इर्द-गिर्द घूमता था। उस दौर का दर्शक जो परदे पर चटख मनोरंजन और रफ़्तार देखने का आदी था, उसे एक जोकर का लंबा दुःख और उसकी लंबी दास्तान बहुत उबाऊ लगी। फिल्म की लंबाई और दो इंटरवल ने दर्शकों के धैर्य की ऐसी परीक्षा ली कि राज कपूर जैसा दिग्गज निर्माता कर्ज के दलदल में डूब गया। यह फिल्म इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण है कि कभी-कभी एक बेहतरीन कलाकृति भी अपने समय से बहुत आगे होने के कारण 'सुपर फ्लॉप' की श्रेणी में खड़ी कर दी जाती है।

अस्सी और नब्बे के दशक के संधिकाल में जब अमिताभ बच्चन का जादू अपने चरम पर था, तब कुछ ऐसी फिल्में आईं जिन्होंने साबित किया कि केवल सुपरस्टार का नाम फिल्म को वैतरणी पार नहीं लगा सकता। 'जादूगर' और 'तूफान' जैसी फिल्में इसका जीवंत उदाहरण हैं। उस दौर में दर्शकों का स्वाद बदल रहा था और वे यथार्थवाद की ओर बढ़ रहे थे, लेकिन फिल्मकार अब भी वही पुराने अलौकिक और घिसे-पिटे फार्मूले दोहरा रहे थे। 'जादूगर' में अमिताभ बच्चन को एक ऐसे किरदार में पेश किया गया जो जादुई शक्तियों से बुराई का अंत करता है, लेकिन फिल्म की कहानी इतनी बचकानी और तर्कहीन थी कि इसे बच्चों ने भी पसंद नहीं किया। फिल्म में फैंटेसी और हकीकत का बेमेल घालमेल दर्शकों को रास नहीं आया। वही एंग्री यंग मैन की छवि को जादू की छड़ी के साथ देखना दर्शकों के लिए एक दुखद अनुभव साबित हुआ। इसी तरह यश चोपड़ा जैसे मंझे हुए निर्देशक की 'परंपरा' भी एक ऐसी ही फिल्म थी, जिसने सामंती परंपराओं और खानदानी रंजिश की उस पुरानी सड़ी-गली कहानी को पेश किया जिसे दर्शक दशक भर पहले ही छोड़ चुके थे।

जैसे-जैसे सिनेमा आधुनिक हुआ, प्रयोगों का जोखिम भी बढ़ा। साल 2007 में संजय लीला भंसाली की 'सांवरिया' एक ऐसी फिल्म बनकर आई जिसे लेकर इंडस्ट्री में जबरदस्त उत्साह था। रणबीर कपूर और सोनम कपूर का डेब्यू और भंसाली की भव्यता का मेल। लेकिन फिल्म की नीली और काली रोशनी वाली कृत्रिम बैकग्राउंड सेटिंग और एक ऐसी कहानी जिसमें नायक और नायिका के बीच का द्वंद्व बहुत ही कमजोर था, दर्शकों को समझ ही नहीं आई। फिल्म का कथानक बहुत ही संक्षिप्त था जिसे खींचकर लंबा किया गया था। लोगों को लगा कि वे फिल्म नहीं बल्कि एक सजी-धजी 'पेंटिंग' देख रहे हैं जिसमें भावनाओं की गर्माहट गायब है। इसके मुकाबले उसी दिन रिलीज हुई 'ओम शांति ओम' की मसाला कहानी ने बाजी मार ली। 'सांवरिया' की असफलता ने स्पष्ट किया कि फिल्म निर्माण में तकनीक और भव्यता तभी काम आती है जब उनके पीछे एक ठोस और जुड़ाव पैदा करने वाली कहानी खड़ी हो।

सुपर फ्लॉप फिल्मों के जिक्र में सुभाष घई की 'यादें' का नाम लेना भी अनिवार्य है। एक समय था जब सुभाष घई का नाम ही हिट की गारंटी होता था। लेकिन 'यादें' के साथ उन्होंने एक ऐसी कहानी चुनी जो पारिवारिक रिश्तों के उलझे हुए ताने-बाने को सुलझाने के बजाय और उलझा गई। फिल्म में ऋतिक रोशन और करीना कपूर जैसे युवा सुपरस्टार्स होने के बावजूद, पटकथा इतनी बिखरी हुई थी कि दर्शक मुख्य किरदारों के जज्बातों से जुड़ ही नहीं पाए। फिल्म के गानों ने तो लोकप्रियता बटोरी, लेकिन स्क्रीनप्ले में गहराई की कमी और अत्यधिक विज्ञापनों के प्रदर्शन ने दर्शकों के अनुभव को किरकिरा कर दिया। यह फिल्म इस बात का उदाहरण बनी कि केवल विदेशी लोकेशंस और बड़े चेहरे फिल्म को नहीं बचा सकते यदि पटकथा की नींव कमजोर हो।

भारतीय सिनेमा के इतिहास में कुछ ऐसी फिल्में भी रहीं जो 'दुस्साहस' का परिणाम थीं। इसमें 'राम गोपाल वर्मा की आग' का नाम सबसे ऊपर आता है। निर्देशक ने कल्ट क्लासिक फिल्म 'शोले' को दोबारा बनाने की कोशिश की, जिसे दर्शकों ने एक अपराध की तरह लिया। गब्बर सिंह जैसे प्रतिष्ठित किरदार को बब्बर सिंह बनाकर और अजीबो-गरीब कैमरा एंगल्स व शोर-शराबे वाले संगीत के साथ पेश करना दर्शकों को कतई मंजूर नहीं हुआ। मूल फिल्म की आत्मा को चोट पहुँचाना और पात्रों के साथ अनावश्यक छेड़छाड़ करना इस फिल्म की सबसे बड़ी हार बनी। दर्शकों ने इसे भारतीय सिनेमा का सबसे बुरा अनुभव करार दिया।

अभिषेक बच्चन की 'द्रोणा' ने फैंटेसी और सुपरहीरो शैली में हाथ आजमाया। फिल्म पर करोड़ों रुपए पानी की तरह बहाए। लेकिन, इसकी कहानी और विलेन का चित्रण इतना कमजोर था कि सिनेमाघरों में दर्शक अपनी हंसी नहीं रोक पाए। हॉलीवुड की तकनीक श्रेष्ठता देख चुके दर्शकों के लिए 'द्रोणा' का बचकाना कथानक एक मजाक बनकर रह गया। फ्लॉप फिल्मों की लिस्ट में अनिल कपूर और श्रीदेवी की सबसे बड़ी फ्लॉप फिल्म 1993 में आई 'रूप की रानी चोरों का राजा' प्रमुख है। इसके अलावा 'मिस्टर बेचारा' (1996), 'हीर रांझा' (1992) और क्रिटिक्स द्वारा सराही गई 'लम्हे' (1991) भी बॉक्स ऑफिस पर सफल नहीं रही थीं। 'हीर रांझा' (1992) फिल्म को भी बॉक्स ऑफिस पर निराशाजनक परिणाम मिले थे। 'मिस्टर बेचारा' (1996) में अनिल कपूर और श्रीदेवी के साथ नागार्जुन भी थे। अक्षय कुमार के करियर में कई बड़ी फ्लॉप और डिजास्टर फिल्में रही। इनमें सरफिरा, खेल खेल में, स्काई फोर्स, बड़े मियां छोटे मियां, रक्षा बंधन, सम्राट पृथ्वीराज, सेल्फी, बच्चन पांडे और 'राम सेतु' शामिल हैं। इनके अलावा, 'सौगंध' (1991), 'जोकर', चांदनी चौक टू चाइना, कमबख्त इश्क, तीस मार खां, लक्ष्मी (ओटीटी पर), 'बेल बॉटम' और 'बॉस' भी बॉक्स ऑफिस पर असफल रहीं।

एक दौर ऐसा भी आया जब रीमेक बनाने की होड़ मची। साजिद खान की 'हिम्मतवाला' ने यह भ्रम पाल लिया था कि अस्सी के दशक की तर्कहीन कॉमेडी और लाउड एक्शन आज के दौर में भी चल जाएगा। लेकिन 2013 का दर्शक बदल चुका था। फिल्म का कथानक इतना शोर-शराबे वाला और सिरदर्द पैदा करने वाला था कि दर्शकों ने इसे पहले ही दिन नकार दिया। यह फिल्म इस बात की गवाह बनी कि गुजरे जमाने के फार्मूले अगर बिना किसी बदलाव के पेश किए जाएं, तो वे डिजास्टर ही साबित होते हैं। इसी कड़ी में आमिर खान और अमिताभ बच्चन की 'ठग्स ऑफ हिंदोस्तान' का नाम भी आता है। दो दिग्गजों को एक साथ देखना दर्शकों का सपना था, लेकिन फिल्म की कहानी 'पाइरेट्स ऑफ द कैरेबियन' की एक सस्ती और कमजोर नकल निकली। दर्शकों को लगा कि उन्हें ठगा गया है, क्योंकि फिल्म में न तो किरदारों की गहराई थी और न ही कोई मौलिकता।

इतिहास गवाह है कि जब-जब फिल्मकारों ने दर्शकों की बुद्धि को कमतर आंका है, बॉक्स ऑफिस पर 'कलंक' जैसी फ़िल्में पैदा हुई हैं। 'कलंक' अपनी भव्यता, भारी-भरकम सेट्स और सितारों की फौज के बावजूद एक ऐसी सुस्त प्रेम कहानी थी जिसे दर्शक पहले ही कई रूपों में देख चुके थे। फिल्म की गति इतनी धीमी थी कि ढाई घंटे का समय काटना दर्शकों के लिए सजा बन गया। भव्यता जब कहानी पर हावी हो जाती है, तो परिणाम हमेशा शून्य ही निकलता है। इन सभी फ्लॉप और सुपर फ्लॉप फिल्मों का यदि हम गहराई से विश्लेषण करें, तो एक ही निष्कर्ष निकलता है कि दर्शक कभी भी तकनीक, बजट या बड़े नाम से लंबे समय तक धोखा नहीं खाता। वह पर्दे पर एक ऐसी कहानी ढूंढता है जो उसके जीवन, उसकी संवेदनाओं या कम से कम उसकी तर्कशक्ति से मेल खाती हो।

चाहे वह 'मेरा नाम जोकर' की अत्यधिक भावुकता हो, 'सांवरिया' की कृत्रिम दुनिया हो या 'आग' जैसा असफल प्रयोग, इन सभी फिल्मों ने फिल्म जगत को कड़वे लेकिन जरूरी सबक दिए हैं। फ्लॉप फिल्में हमें बताती हैं कि फिल्म निर्माण केवल एक व्यापारिक गणित नहीं है, बल्कि यह दर्शकों की नब्ज पहचानने की एक सूक्ष्म कला है। इन फिल्मों की विफलता ने ही अक्सर सिनेमा को नई दिशा दी है और फिल्मकारों को अपनी रणनीति बदलने पर मजबूर किया है। इसलिए, जब भी हम हिंदी फिल्म इतिहास की गौरवगाथा लिखें, तो इन असफलताओं को भी वही स्थान मिलना चाहिए, क्योंकि इन्हीं गिरती हुई इमारतों के मलबे पर आज की समझदार और यथार्थवादी फिल्मों की नींव खड़ी है। सफलता अगर मंजिल है, तो ये फ्लॉप फ़िल्में वे मील के पत्थर हैं जो बताते हैं कि किधर नहीं मुड़ना है। अंततः, सिनेमा के इस महासागर में लहरें वही ऊंची उठती हैं जिनकी गहराई में एक सच्ची और सशक्त कहानी छिपी होती है।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

किसी और जानवर से ज्यादा चर्चित हुए सिनेमाई शेर

अशोक जोशी

शेर न केवल जंगल का राजा है, बल्कि भारतीय समाज का एक प्रमुख प्राणी भी है जिसे राष्ट्रीय प्राणी का दर्जा प्राप्त हुआ है। फिल्मों में तो शेर का उल्लेख मिलता ही है लेकिन स्टंट फिल्मों में भी नायकों

को शेर से दो-दो हाथ करते दिखाया गया है। 1954 में जब स्टंट फिल्मों का दौर था जॉन कावस, भगवान और दलपत अभिनीत फिल्म 'शेर दिल' आयी थी। इस फिल्म में तब के ही मेन जॉन कावस को जिंदा शेर से लडते दिखाया गया था।

भारतीय के पौराणिक और ऐतिहासिक काल में भी शेर का उल्लेख मिलता है। शकुंतला और दुष्यंत के पुत्र भरत जिनके नाम से हमारे देश का नाम भारत रखा गया है वह भी बचपन से ही शावकों से खेलता रहा है। बौद्ध काल में बनाए गए हमारे स्तूपों में शेर को उकेरा गया है जिसकी प्रतिकृति नए संसद भवन में स्थापित की गई है जो हमारे शौर्य का प्रतीक है। शेर को लेकर समाज में कई तरह के मुहावरे कई तरह की उपमाएं और कई तरह के कहानी किस्से प्रचलित है। कुल मिलाकर हमारे समाज और संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है शेर । यही कारण है कि हिन्दी सिनेमा में भी कहीं कहीं इसके दर्शन होते आए हैं।

हमारे कुछ कलाकारों को हिन्दी सिनेमा का शेर कहा जाता है । उनमे से ही एक हैं सोहराब मोदी जिनकी निर्माण संस्था मिनर्वा मूवीटोन का प्रतीक चिन्ह ही दहाडता हुआ शेर है। उन्हीं की फिल्म सिकंदर में जब विदेशी आक्रांता सिकन्दर के सामने पोरस बने सोहराब मोदी अपनी खास पारसी स्टाइल में कहते हैं झुण्ड में तो बकरियां आती हैं शेर तो अकेला ही आता है और अकेला ही राज करता है तो सिनेमाघर तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज जाया करता था। संवादों की अदायगी में सोहराब मोदी वाकई किसी शेर से कम नहीं थे। उनके बाद पृथ्वीराज कपूर और फिर राजकुमार ने परदे पर अपनी सिंह गर्जना से कई बरसों तक सिने जगत पर राज किया।

पौराणिक तथा ऐतिहासिक फिल्मों में तो शेर का उल्लेख मिलता ही है लेकिन स्टंट फिल्मों में भी नायकों को शेर से दो-दो हाथ करते दिखाया गया है। 1954 में जब स्टंट फिल्मों का दौर था जॉन कावस, भगवान और दलपत अभिनीत फिल्म 'शेर दिल' आयी थी। इस फिल्म में तब के ही मेन जॉन कावस को जिंदा शेर से लडते दिखाया गया था। इस दृश्य की इतनी ज्यादा चर्चा हुई थी कि तब लोग केवल शेर से जॉन कावस की फाइटिंग देखने ही सिनेमाघरों में जाते थे। यह टाइटल

इतना मशहूर हुआ था कि 'शेर दिल' नाम से कई फिल्में बनी। 1965 में पिंकी फिल्मस के बैनर तले शेर दिल का निर्माण हुआ था। इस फिल्म के 'शेर दिल' थे दारा सिंह। फिल्म में उनके साथ परवीन चौधरी, जयंत, रंधावा, उमाकांत और भगवान की प्रमुख भूमिका थी। यह फिल्म राजघराने के षड्यंत्रों पर आधारित थी। फिल्म में दारा सिंह का शेर से मुकाबला दिखाया गया था जिसे देखकर राजकुमारी परवीन चौधरी उनकी ओर आकर्षित हो जाती है। फिल्म का निर्देशन चांद ने किया था और संगीत सी.रामचंद्र जैसे महान संगीतकार ने दिया था।

हिंदी सिनेमा के जाने माने निर्मत जगदीश सदाना ने 1990 मे धर्मेंद्र, ऋषि कपूर, प्रदीप कुमार, रोहिणी हट्टंगड़ी, गुलशन ग्रोवर, कादरखान ,अनीता राज और किमी काटकर को लेकर 'शेरदिल' का निर्माण किया था। फिल्म का निर्देशन मोहन सहगल ने किया था और इसके संगीतकार थे लक्ष्मीकांत प्यारेलाल। फिल्म का नायक अपराध की दुनिया का शेर है जो शेरा के नाम से अपराध करता है। इसके पहले मोहन सहगल वन्य जीवन पर आधारित अपनी फिल्म कर्तव्य में धर्मेन्द्र को फारेस्ट आफिसर के रूप में शेर से भिडते दिखा चुके हैं।

हिन्दी फिल्मों के हीमैन धर्मेन्द्र फिल्म 'मां' में हेमा मालिनी को बचाने के खातिर शेर से भिड़े हैं, तो 'धरमवीर' में घमंडी राजकुमारी जीनत अमान के गुस्से का शिकार होकर शेर से दो दो हाथ करते दिखाई दिए है। गुरूदत्त फिल्मस की 'शिकार' में भी धर्मेन्द्र घायल शेर का शिकार करने जाते हैं। राजकपूर की फिल्म 'बॉबी' के लोकप्रिय गीत हम तुम एक कमरे मे बंद हो के एक अंतरे में हम तुम एक जंगल से गुजरे और शेर आ जाए में जब डिम्पल अपने कपड़े उतारकर खडी हो जाती है और कहती है कि शेर से कहूं कि तुम्हें छोड़कर मुझे खा जाए

तो सिनेमा हाल में बैठे दर्शक शेर को भूलकर डिम्पल के शरीर को लार टपकते देखने लगते थे और सिनेमा हॉल तालियों से गूंज जाता था।

साठ के दशक में बनने वाली स्टंट फिल्मों में जंगल से जुड़ी कहानियों पर बनने वाली फिल्मों में टार्जन पर आधारित जितनी भी फिल्में बनी, उनमें ज्यादातर फिल्मों में आजाद ने टार्जन की भूमिका निभाई है। उसके बाद टार्जन कम्स टू देहली में दारा सिंह टार्जन बने थे। और 1985 में हेमंत बिरजे और किमी काटकर की फिल्म आयी थी एडवेंचर्स ऑफ टार्जन। इन सभी फिल्मों में टार्जन को शेर से लड़ते दिखाया गया था। मीना कुमारी और सुनील दत्त की फिल्म 'मैं चुप रहूंगी' में एक बाल नाटिका दिखाई गई थी जो चतुर खरगोश और दुष्ट शेर पर आधारित थी। इसके अलावा राजकपूर की फिल्म 'मेरा नाम जोकर' के एक दृश्य में राजकपूर गलती से शेर के पिंजरे में घुस जाता है तब रिंग मास्टर दारासिंह आकर उसे बचाता है।

शेर से ही मिलते जुलते शीर्षक पर बनी थी हिन्दी फिल्म 'शेरा' जो 1975 में प्रदर्शित हुई थी। फिल्म में कबीर बेदी और योगिता बाली की मुख्य भूमिका थी। बाद में 1999 में भी 'शेरा' फिल्म का निर्माण दक्षिण भारत में हुआ था जिसमें मिथुन चक्रवर्ती के साथ गुलशन ग्रोवर, रामी रेड्डी, दीपक शिर्के ने अभिनय किया था। फिल्म का निर्देशन टीएलवी प्रसाद ने किया था। फिल्म का नायक जय एक सीधा साधा इंसान है जो ड्रग माफिया द्वारा अपनी बहन की हत्या का बदला लेने के लिए शेरा बन जाता है।

1990 में राज बब्बर, सोनम और कबीर बेदी ने 'शेरा शमशेरा' ने काम किया था। फिल्म का निर्देशन एसआर प्रसाद ने किया था। फिल्म का जंगल के शेर से कोई नाता नहीं था। हिंदी फिल्म 'बेताज बादशाह' में राजकुमार शेर पालते हैं तो उनकी बेटी ममता कुलकर्णी शेर के बच्चे को लेकर कॉलेज जाती है। हिन्दी फिल्म सूरज में भी अजीत को शेर को सहलाते दिखाया होगा। इसके अलावा छलिया, जंजीर और 'खुदा गवाह' के पात्र शेर खान बहुत चर्चित रहे हैं। कहने को तो हिन्दी फिल्म बनी थी 'नरसिम्हा' जिसका शेर से कोई लेना देना नहीं था। शेर की तरह ही शेरनी ने भी हिन्दी सिनेमा में दस्तक दी है। 1988 में हर्मेश मल्होत्रा के निर्देशन में बनी 'शेरनी की शेरनी' थी हिन्दी फिल्मों की स्टार नायिका श्री देवी। फिल्म की नायिका दुर्गा एक गांव की सीधी सादी लडकी है जो ठाकुर द्वारा अपने परिवार की हत्या का बदला लेने के लिए बंदूक उठाकर शेरनी बन जाती है। पिछले साल कारगिल युद्ध के हीरो विक्रम बत्रा की बहादुरी पर बनी फिल्म का शीर्षक था शेर शाह जो हमारे सैनिकों के शेर जैसे बुलंद हौंसलों को बताती है।

शेर की पृष्ठभूमि पर बनी सबसे प्रभावी फिल्म है पंकज कपूर की फिल्म 'शेर दिल' जो पीलीभीत टाइगर रिजर्व की सच्ची घटनाओं पर आधारित है जहां लोग अपने गांव के लोग अपने परिवार के वृद्धजनों को शेर का शिकार बनने के लिए छोड़ जाते हैं और शेर द्वारा उनका शिकार किए जाने के बाद प्रशासन से मुआवजे का दावा करते हैं। जब से फिल्मों में वीएफएक्स और एआई का दौर आया है, शेर भी वास्तविक कम और शेर की पदवी हासिल इंसानों की तरह बनावटी ही दिखाई देने लगे हैं।

हार की जीत... या जीत की हार !

सामयिक

प्रकाश पुरोहित
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

भाजपा, मोदी, शाह के भले में रहेगा कि ममता बनर्जी फिर बंगाल जीत जाएं ! जीत गईं तो बंगाल तक रहेंगी और हरा दिया तो... फिर दिल्ली दूर नहीं ! फिर तो छाती पर मूंग दलने से रोका नहीं जा सकता ! कहा जा रहा है कि इस बार बंगाल में भाजपा का उतना जोर नहीं है, जितना पिछले चुनाव में था। मैं भी इससे सहमत हूं। वजह यही है कि जब मैं सोच सकता हूं तो भाजपा के थिंक- टैंक तो समझ ही चुके होंगे। मराठी में चर्चित वाक्य है- 'सिंह आला अणि गढ़ गेला।' यह सभी जगह लागू होता है। कोई नहीं चाहता कि 'रोजे उगलवाने जाएं और नमाज गले पड़ जाए' या 'लेने गई पूत और खो आई भर्तार।' आधे के लिए कोई पूरा जोखिम में कैसे डाल सकता है भला !

अभी 'इंडिया' (यानी भारत नहीं... गठबंधन) में ऐसा कोई चेहरा नहीं है, जो मोदी के मुकाबले खड़ा किया जा सके। साऊथ में हैं कुछ मुख्यमंत्री (जैसे स्टालिन), लेकिन उनकी पकड़ शेष भारत पर नहीं है, जैसे कि मोदी या भाजपा की साऊथ में नहीं है। अब साऊथ जीतने के लिए कोई बाकी भारत खोने की शर्त रख दे तो कौन तैयार होगा, मोदी-शाह भी नहीं। अपने-अपने इलाके हो गए हैं और कोशिश यही रहती है कि दूसरे के खेत में मुंह मारा जाए !

वैसे तो बिहार में ही कौन-सा भाजपा का राज था ! नीतीश कुमार सांसद बना दिए गए तो दलबदलू विधायक को मुख्यमंत्री बनाने का मौका भाजपा को मिल गया। खालिस भाजपाई को तो नीतीश कुमार भी बर्दाश्त नहीं करते कि अगली बार पत्ता ही साफ हो जाएगा। पूर्व कांग्रेसी या समाजवादी हैं तो कुछ तो लाज, शर्म या समझ बची होगी। नीतीश की तरह कभी भी पलटी मार सकता है। ये नीतीश का भरोसा रहा होगा तो भाजपा का जोखिम ।

यहां सोचने लायक यह है कि मुख्यमंत्री की कुर्सी छोड़ने के बाद सांसद हो जाने के पीछे कहीं नीतीश कुमार की कोई चाल तो नहीं है। इतने बरस सी एम रह कर भाजपा का बाल बांका नहीं कर सके, बल्कि अपनी ही खांकरे करवाते रहे और हासिल क्या हुआ तो सिंगट्टा ! इतने बरस मुख्यमंत्री रहते कोई भी बोर हो सकता है, तो मन बहलाने के लिए तो सांसद बने नहीं होंगे। अपने हाथ से कोई अपना डिमोशन कैसे कर सकता है ! यदि यह अनुमान है कि मौका आने पर नीतीश कुमार को मोदी की जगह प्रधानमंत्री बनाया जा सकता है... तो यह चंडूखाने की अफवाह नहीं है, क्योंकि एनडीए में आम सहमति के लिए कोई गैर-भाजपाई नाम ही चाहिए। नीतीश सिर्फ दिल्ली दर्शन को तो गए नहीं हैं और ना ही उन्हें राष्ट्रपति ही बनना है कि अभी फजीहत देख ही रहे हैं। लड़के से चमत्कार की उम्मीद नहीं है। ज्यादा से ज्यादा डिप्टी सीएम ही बन सकता था, वो भी नहीं बन पाया। तो यह कहना भी गलत है कि लड़के को रोजगार से लगाने के लिए नीतीश ने कुर्सी छोड़ दी है।

हां, तो बात हो रही थी बंगाल की। भाजपा यदि इस बार जीत गई तो...? यकीन मानिए आफत ही मोल लेने वाली है कि तब ममता सिर्फ बंगाल तक तो नहीं रहने वाली हैं, तब उन्हें दिल्ली नजदीक नजर आने लगेगी, क्योंकि इस समय 'इंडिया' में ममता से दमदार और सर्वसम्मत चेहरा दूसरा नहीं है। राहुल भी मोदी-शाह से हंस कर मिल लेते हैं, लेकिन ममता ही है, जो फूटी आंख भी देखना नहीं चाहती है। चुनाव आयोग और केंद्र सरकार को चकरधिन्नी बना रखा है। डरती किसी से नहीं, डराती ही रहती हैं। छवि पर कोई दाग नहीं है और सादा जीवन सभी के सामने है कि अपने ही घर में रहती हैं और जब-तब सड़क पर उतर आती हैं। दिन में चार बार साड़ी भी नहीं बदलतीं !

अब कल्पना कीजिए कि बंगाल चुनाव हार गईं ममता.. तो आगे क्या? सांसद बनकर सीधे दिल्ली का रुख करेंगी और सरकार की नाक में दम कर देंगी, एक दिन मोदी- शाह को चैन से नहीं हंसने-बोलने देंगी। मुख्यमंत्री की कुर्सी खो कर यदि प्रधानमंत्री की मिलती है तो बुरा क्या है। भाजपा भी यह जानती है कि ममता को दिल्ली से जितना दूर रखा जाए, उतनी ही अपनी खैर ! अब ममता को चुनाव में हरा कर तो दिल्ली जाने से नहीं रोका जा सकता, तो यही बेहतर नहीं होगा कि उन्हें मुख्यमंत्री बना रहने दिया जाए ताकि दिल्ली में अमन-चैन रहे !

यह बात आम नहीं है, लेकिन क्या ऐसा संभव नहीं है? जब शिवराजसिंह के पर निकलने लगे तो उन्हें केंद्र में मंत्री बना कर जमीन पर ले आए, देखिए आजकल कितनी ठकुर-सुहाति करते नजर आते हैं। रमन सिंह के तो पते ही नहीं हैं, हर्षवर्द्धन, रविशंकर प्रसाद, स्मृति इरानी कहां गए ! ये तो अपने वालों को निपटाने का तरीका था, लेकिन विपक्ष को तो अलग ढंग से ही ठिकाने लगाया जा सकता है ना, इसलिए मुझे लगता है कि इस बार भी बंगाल में ममता ही जीत जाएंगी, क्योंकि भाजपा अपनी जीत के जरिए कब्र खोदने का ठेका ममता को नहीं देगी। क्या सोचते हैं आप, बताइएगा !

उफ़्फ़ ये समाज और इसकी

...और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी
लेखिका साहित्यकार हैं।

आजकल समाज को कोसने का एक ट्रेंड चल पड़ा है खूब। यू ट्यूब, इंस्टा, फेसबुक पर ऐसे गीत, कवितायें, विचार आ रहे हैं जिसमें ये दर्शाया जा रहा है कि समाज की परवाह ना करें। अपनी मर्जी का जीवन जियें। क्या हमने समाज को इतने अधिकार दिये हुये हैं कि वो हमारी पसंद, नापसंद, हमारे कपड़े पहनने, शादी, प्रेम, परिवार, मृत्यु के नियम तय करें।

चलिये पहले बात करते हैं समाज है क्या और उसके अंतर्गत क्या अनिवार्य विषय आते हैं। क्या हमने समाज के अंतर्गत आने वाले सभी नियमों को निभाया और क्यों निभायें? ये नियम बनाने वाले कौन हैं?

समाज जीवन का अनिवार्य अंग है। जो अलग-अलग विचार धाराओं वाले व्यक्तियों के समूह से बनता है यह हमें सुरक्षा, सहयोग, विकास प्रदान करता है। मूलतः समाज अमानवीय व्यवहार, अनियमितताओं, रीति-रिवाजों पर कंट्रोल करने के लिये बहुत उपयोगी है, परंतु कई बार रूढिवादियों से घिरे लोग इसका दुरूपयोग करते हैं जैसे हरियाणा तरु खाप पंचायत, गांवों में डायन, चुडैल जैसी प्रथाओं का चलना, प्रेम विवाह के चलते जाति से बाहर कर देना।

कुछ समय से हम देख रहे हैं कि हर व्यक्ति समाज हो रहा है और समाज में जातिवाद का प्रवेश हो चला। हर जाति का इक समाज है उसके कट्टर नियम हैं जिन्हें अक्सर मध्यमवर्गीय समूह ज्यादा भुगतते हैं उच्चवर्गीय या निम्नवर्गीय ज़्यादतर परंपराओं का पालन नहीं करते मसलन विवाहेत्तर संबंध 2-3 पत्नी, पैसों के लिये अपराध करना।

युवा पीढ़ी हमें सिखाती है कि आप ऐसे समाज की परवाह क्यों करते हैं जो आपकी परेशानियाँ बढ़ाता है।

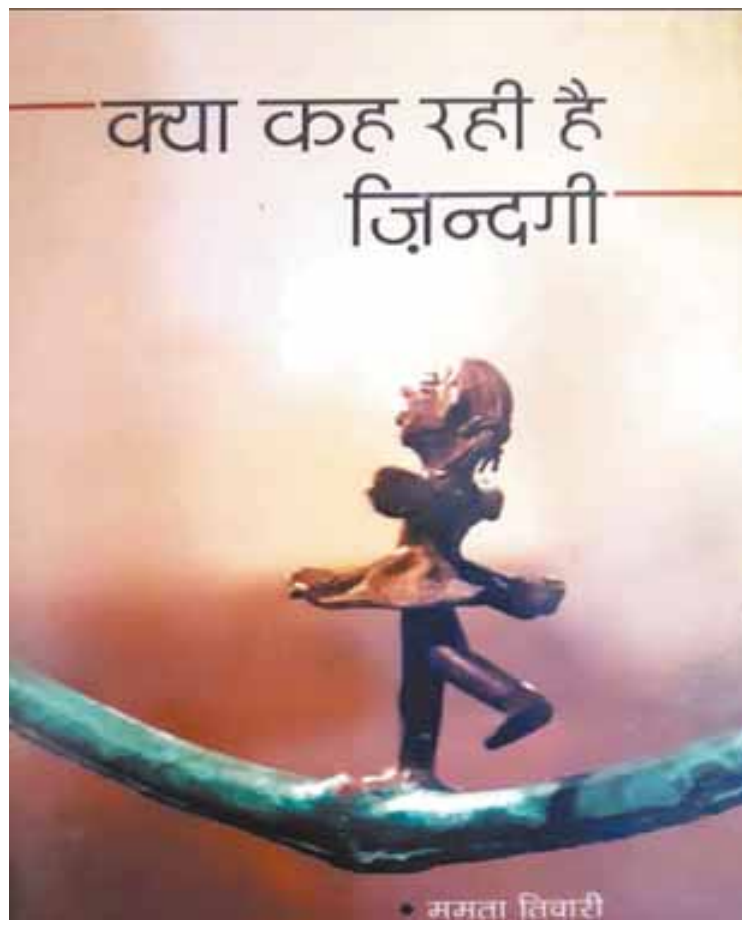

बहुत वर्षों पहले हम हिप्पी संस्कृति को हिकारत से देखते थे, हरे कृष्णा हरे राम मूवी में जीनत अमान जब गाती थी दुनिया ने हमको दिया क्या तो युवा पीढ़ी के भीतर बागी तेवर पनप जाते थे।

चलिये समाज के फायदे देखें तो इससे पता चला है हम उच्छश्रृंखलता से बचे रहते हैं, लोगों का डर रहता है, गलत काम खुल के नहीं होते, परिवार सड़क पर नहीं लड़ता, लोग कानून हाथ में लेने से डरते हैं। विवाह परंपरा पर अभी भी विश्वास करते हैं। मृत्यु के सारे कर्मकांड में समाज की विशेष भूमिका है अच?छा ये प्रक्रिया परिवर्तनशील रहती है। समाज में कहा तो यही जाता है सबके लिये बराबर के नियम हैं। ये एक ऐसा संगठन है जहाँ अपरोक्ष रूप से व्यक्ति एक दूसरे से जुड़ा रहता है। अब इसमें भी विरोधाभास है कोई ज़रूरी नहीं अच्छी परंपराओं का वहन ही समाज की विशेषता रही होगी।

अब समाज के कारण जो उपद्रव फैला है और कुछ लोग लोग क?या कहेंगे सोच के ही जी रहे हैं वे इसका शिकार हैं।

समाज में व्याप्त कुरीतियाँ (सामाजिक रूढ़ियां) अज्ञानता, अंधविश्वास और संकीर्ण मानसिकता के चलते हानिकारक प्रथायें हैं जैसे दहेजप्रथा, बाल विवाह, जातिवाद, कन्या भ्रूण हत्या, घरेलू हिंसा, और अंधविश्वास शामिल है। लिंग भेद में अक्सर महिलाओं के साथ उत्पीड़न होता है। जाति के आधार पर बढ़ता प्रभाव राजनीति में वोट का मुद्दा बन रहा है। सुविधा व धन के अभाव के चलते आरक्षण ना होकर माना जाता है विशेष जाति अक्षम है इसलिये उसे ही सुविधा मिले जिससे आम वर्ग में असंतोष है। धर्म राजनीति में और राजनीति धर्म में घुसती चली जा रही है। दायरों ने दम तोड़ दिया। शिक्षा के साथ भी छुआ छूत है। समाज नियम तय करता है किस जाति का व्यक्ति मंदिर, मस्जिद में प्रवेश करें। एक समाज में एकल विवाह, एक समाज में बहु विवाह प्रथा है। जादू टोना, पशु बलि बरकरार है।

इस परेशानी से बचने के लिये इक वर्ग ने अभियान चलाया है। जिसमें अहम् उपाय शिक्षा है (परंतु मैंने शिक्षित लोगों में भी रूढ़िवाद देखा है) बहुओं के लिये पर्दा प्रथा, नौकरी ना करना शिक्षित समाज का अभिन्न अंग है। कानून है, पर पालन के लिये कोई देखभाल करने वाला नहीं है। कुरीतियाँ दूर करने के लिये कैंप लगाये जा रहे हैं। जागरूकता अभियान चल रहे हैं परंतु अभी भी लड़की से पहले लड़के की चाह है दिलों में। कितना भी धन हो पर दहेज का लालच है। सबसे अहम् चीज है मानसिकता का बदलाव। युवा पीढ़ी, लिवइन के जरिये बंधनों का विरोध करती है। माँ-बाप की अवज्ञा, घर के रीति रिवाज़ों को ना मानना अपनी आज़ादी का प्रतीक मानती है। हमारे समाज में माँ-बाप, बड़ों के आदर की परंपरा है जो आज बिखर रही है। वृद्धों की उपेक्षा समाज के नियमों की उपेक्षा है। पुराने समय में बुजुर्गों के शब्दों की कीमत होती थी। मैं ये नहीं कहती तानाशाही सहन करो परंतु थोडे धैर्यवान और नम्र बनों आप को समाज की जो कुरीतियाँ पसंद नहीं उनका विरोध करो जो सही लगे उनको स्वीकार करो क्योंकि आप ही समाज हैं चाहे आप उसमें परोक्ष रूप से भाग ना लेते हों, ना मानते हो समाज को, पर आप समाज हैं तो क्यों ना समाज में रहकर उसकी कुरीतियों का विरोध कर पूछते रहें एक दूसरे से और क्या कह रही है जिंदगी।

विडंबना

इतिहास हो गया ऐसे कलाकार

बंसीलाल परमार

2 जनवरी 2014 को प्रीतमलाल दुआ आर्ट गैलरी इंदौर में परछाई नाम से ग्रुप एक्जीबिशन थी मेरे चार चित्र थे उसमें। चाय पीने के लिये रोड़ के सामने ही चाय की टपरी थी वहां आया चाय की दुकान के पास ये बुजुर्ग पेंटर साहब मिले जो अरविंद केजरीवाल जो उस समय अन्ना आंदोलन से उभरे थे अखबार में उनके चित्र पर ग्राफ डालकर पोट्रेट बनाने तैयारी कर रहे थे।

उनसे बातचीत हुई। वे पास है अपनी कच्ची सी वर्कशाप में ले गये ।इसी क्षेत्र रीगल टाकीज हुआ करता था वे अतीत में खो गये जब पेंटर का दर्जा स्टार से कम नहीं था लोग उनके हुनर की कद्र करते ,टाकिज में फिल्म लगने से पहले इनकी सेवाएं महत्वपूर्ण थी ,सभी जगह लगायें जाने वाले पोस्टर ये लोग ही बनाते थे । इनके काम करते देखकर लोग कौतुहल से इकठ्ठे हो जाते थे काम के लिये ये हेल्पर भी रखते थे बहुत स्वर्णिम समय था इनका बारह महीने काम मिलता था बहुत सी बार फुटकर काम लौटाना पड़ता था ।पुरी जवानी इसी व्यस्तता में गुजरी चुनाव का काम तो इनके व्यवसाय का कुंभमेला था खुशहाल जिंदगी कट रही थी ।भविष्य बदहाल होगा सोचा नहीं। कंप्यूटर और टेक्नोलोजी ने प्रवेश किया फ्लेक्स और बड़े बड़े कट आउट मशीनों से बनने लगे और ये खारिज होते गये ।मैंने इनका एक कागज पर साक्षात्कार भी लिया था पर वह गुमशुदगी में चला गया इनकी वर्कशाप कुछ पोट्रेट बने थे।

उप संचालक जनसंपर्क सुनील वर्मा तथा सहायक संचालक जनसंपर्क सुश्री निहारिका मीना, हिमांशी बजाज को मिलेगा लोक संपर्क सम्मान

भोपाल। राष्ट्रीय जनसंपर्क दिवस पर पीआरएसआई भोपाल द्वारा 26 अप्रैल को सीएमई हॉल एलएनसीटी यूनिवर्सिटी परिसर में किया जाएगा सम्मानित, 07 महिला पत्रकारों को मिलेगा अचला एवं उदिता अवार्ड।

पब्लिक रिलेशंस सोसायटी ऑफ इंडिया के भोपाल चैप्टर द्वारा 26 अप्रैल को आयोजित किये जाने वाले राष्ट्रीय जनसंपर्क दिवस के कार्यक्रम में जनसंपर्क विभाग के उप संचालक श्री सुनील वर्मा, सहायक संचालक सुश्री निहारिका मीना, सहायक संचालक सुश्री हिमांशी बजाज, वरिष्ठ आंचलिक पत्रकार श्री मुन्ना लाल मिश्रा एवं चौधरी चरन सिंह यूनिवर्सिटी मेरठ की रिसर्च एसोसिएट डॉ. बीनम यादव को लोक संपर्क सम्मान से सम्मानित किया जाएगा । यह सम्मान सीएमई हॉल (जे.के.हॉस्पिटल), एलएनसीटी यूनिवर्सिटी परिसर में प्रातः 10.30 बजे से आयोजित होने वाले कार्यक्रम में प्रदान किया जाएगा।

पीआरएसआई भोपाल चैप्टर के अध्यक्ष श्री मनोज द्विवेदी ने बताया है कि राष्ट्रीय जनसंपर्क दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में ''जनसंपर्क -लोकतंत्र का पाँचवा स्तंभ'' विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया जाएगा । पीआरएसआई भोपाल चैप्टर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय जनसंपर्क दिवस के कार्यक्रम में मध्यप्रदेश के पत्रकारिता मीडिया, टी.वी. मीडिया और कॉर्पोरेट मीडिया में कार्यरत महिला पत्रकारों, टी.वी. एंकरों को अचला और उदिता सम्मान से सम्मानित किया जाएगा । कार्यक्रम में वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीतिक विश्लेषक श्री गिरिजा शंकर, प्रख्यात साहित्यकार डॉ. उर्मिला शिरीष एवं कुलगुरू (वाइस चांसलर) एलएनसीटी यूनिवर्सिटी डॉ. नरेन्द्र कुमार थापक विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे।

इन्हें मिलेगा अचला-उदिता सम्मान- श्रीमती योजना लाड़, सुश्री निधि परमार, सुश्री ऋषिता तोमर, सुश्री कोपल बरखाने, सुश्री साक्षी त्रिपाठी, सुश्री राशि श्रीवास्तव एवं सुश्री दीप्ति तोमर । गौरतलब है कि पब्लिक रिलेशन सोसायटी ऑफ इंडिया जनसंपर्क एवं संचार के क्षेत्र में विभिन्न संगठनों में कार्य करने वाले प्रोफेशनल्स की 70 वर्ष पुरानी एक राष्ट्रीय स्तर की संस्था है। इस संस्था के पूरे देश में लगभग 27 चेप्टर कार्यरत हैं।